चैतन्य लहरी

खण्ड V, अंक 3 व 4

भगवान शिव का निवास श्री माता जी के चरणों में हैं

परम् पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी

चैतन्य लहरी

खण्ड V, अंक 3 व 4

विषय सूची

	पृष्ठ
(1) शिवरात्री पूजा के सुअवसर पर कुछ विशेष बातें	3
(2) कुण्डलिनी पूजा सारांश	8
(3) श्री महालक्ष्मी पूजा सारांश	11
(4) श्री हँसा–चक्र पूजा सारांश	14
(5) श्री विष्णुमाया पूजा सारांश	17
(6) क्रिसमस पूजा सारांश	20
(7) श्री माताजी द्वारा दी गई शिक्षा	22
(8) विनती सुनिए आदि शक्ति मेरी	23

भगवान शिव

वे ही सबके भगवान हैं, परम –पिता हैं तथा उनका निवास श्री माता जी निर्मला देवी के हृदय में हैं।

" शिव सवर्दा पवित्र एवं निष्कलंक हैं।"

श्री माता जी

प्रार्थना

" हे परमात्मा हमें वह शक्ति तथा आकर्षण का स्रोत प्रदान कीजिए जिससे हम अहँ, सांसारिक सुख तथाअन्य चीजों का मोह त्याग दें और पूर्ण शिव तत्व के निर्मल आनन्द रूप में लीन हो जाएं"।

श्री माता जी

" आप पूर्ण हृदय, आत्मा तथा बुद्धि से परमात्मा को प्रेम करें। यह प्रथम तथा महानतम धर्मादेश हैं।"

श्री जीसज़

" जो पुरुष मन–बुद्धि से परे, सर्वव्यापी, अकथनीयस्वरूप और सदा एकरस रहने वाले, नित्य, अचल, निराकार, अविनाशी सच्चिदानन्द ब्रह्म का निरन्तर एकीभाव से ध्यान करते हैं, ऐसे सम्पूर्ण प्राणियों के हित में रत और सबको सम भाव से प्रेम करने वाले योगी वास्तव में मुझको प्राप्त होते हैं।

परन्तु परमात्मा की निराकार रुप में उपासना करने वाले साधकों को बहुत परिश्रम करना पड़ता है क्योंकि अव्यक्त को देहधारी बहुत कठिनाई से ही प्राप्त कर सकते हैं।"

श्री कृष्ण

हे परमात्माः मेरे सिर में रहो, तथा सूझ में,
आखों में रहो तथा दृष्टि में,
मुँह में रहो तथा वाणी में,
हृदय में रहो तथा प्रेम में,
जीवन में रहो तथा श्रृद्धा में।

श्री शिव

वही शिव है–वही स्वः है– आत्मा महानतम
वर तथा तपोफल प्रदायक,
संहारक वही संरक्षक वही,
पति और पिता, हैं आदि गुरु,
नृतक भी वही, नटराज भी।
पवित्र, निष्कलंक महायोगी वही,
क्षमाशील करुणा के सागर वही,
चरम रुप में सदाशिव वही,
परे बुद्धि–मन से चित्त, माया से भी।
गुणों से परे हैं सत्य वही,
चराचर जगत के पूर्ण ब्रह्म भी।

भगवान शिव का निवास श्री माताजी निर्मलादेवी के हृदय में हैं।

मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य आत्म साक्षात्कार तथा परमात्मा में विलय परम मां के चरण कमलों में पूर्ण समर्पण के बिना असंभव हैं।

श्री माता जी ही शिव, जो कि परम हैं, का ज्ञान प्रदान करती हैं।

शिव शक्तैक्य रुपिणी भी वे ही हैं जिनका रुप शिव तथा शक्ति का मिलन है। शास्त्रों में कहा गया है कि शक्ति के बिना शिव नहीं और शिव के बिना शक्ति नहीं। चांद और उसकी चांदनी की तरह उनमें कोई भेद नहीं ।

जय श्री सदाशिव!

पूजनीय आप ही एक हैं.
सबसे परे, सबके मित्र , सभी कुछ स्वयं में समेटे हुए,
कैसे गाएं महिमा प्रभू आपकी?
स्वयं से योग की इच्छा का वर दो हमें।

शिवोऽहं

पतन, प्रवाह और थकान से परे,
क्रोधावेश और क्षीणता की पकड़ से परे,
शिवोऽहं शिवोऽहं।
महाप्राण द्वारा, कारण अकारण,
हूँ महान शाश्वत विराम,
शिवोऽहं शिवोऽहं
असीम कृपा का आनन्दमय क्षेत्र,
न जिससे ऊंचा न आगे कोई,
शिवोऽहं शिवोऽहं।
अव्यक्त, अपरम्पार और निष्कलंक,
धारण सभी कुछ अकेला करुं,
शिवोऽहं शिवोऽहं

आत्मा

हमारे अन्तः स्थित आत्मा सर्वोत्तम है। उसकी उत्कृष्टता अथाह है। इसी कारण इसका शश्वत महत्व है। असीम होने के कारण हम उसकी थाह नहीं पा सकते।

हम कहते हैं कि सर्व शक्तिमान परमात्मा सत्–चिन्त + आनन्द है। सत् अर्थात सत्य। मानवीय भाषा में हम सत्य का संगत (रिलेटिव) रुप जानते हैं। पर जिस सत्य की बात मैं आपको बताने वाली हूं वह पूर्ण है और उसी से सारे संबंध आरम्भ होते हैं।

'सत्' ही 'पुरुष' है यही परमात्मा है जो वास्तविक सृजन में भाग नहीं लेता, केवल उत्प्रेरक (कैटालिस्ट) है। उदाहरण इस प्रकार हो सकता है: मैं सारा कार्य कर रहा हूं, मैं ही सारा सृजन कर रहा हूं, परन्तु मेरे हाथ में एक प्रकाश है जिसके बिना मैं कुछ नहीं कर सकता। यही मेरे सृजन कार्य का सहारा है। परन्तु यह प्रकाश किसी भी प्रकार से मेरा कार्य नहीं करता। इसी प्रकार सर्वशक्तिमान परमात्मा भी, इसी प्रकाश की तरह साक्षी मात्र हैं।

परन्तु परमात्मा का दूसरा गुण 'चित्त' है। उत्तेजित होने पर जब उसका दिल धड़कता है तो अपने चित्त से वह सृजन करने लगता है

परमात्मा का तीसरा गुण 'आनन्द' है। 'आनन्द' की अनुभूति, जिसे परमात्मा अपने विचारों तथा सृजन से प्राप्त करता है। यह तीनों, 'सत्+चित्त+आनन्द' जब शून्य बिन्दु पर मिलते हैं तो ब्रह्म तत्व बन जाते हैं। जब यह तीनों गुण एक होते हैं तो न तो कोई सृजन होता है और न, अभिव्यक्ति। 'आनन्द' की एकाकारिता 'चित्त' से ही तो है क्योंकि 'चित्त' 'आनन्द' में विलय के कगार पर होता है और 'आनन्द' की एकाकारिता 'सत्' से हो चुकी होती है। तीन गुणों का एक सम्मिश्रण, पृथक करके तीन प्रकार के दृष्यों की सृष्टि करता है। 'आनन्द' जब सृष्टि के साथ चलने लगता है तो सृष्टि अधोगति की ओर चल पड़ती है, सत्य की अवस्था से असत्य की ओर, माया या भ्रम की ओर। यह दृष्टान्त का एक भाग है।

जब आपका मिलन सर्व शक्तिमान परमात्मा से होने लगता है तो दृष्टान्त का दूसरा भाग आरंभ होता है। यह प्रक्रिया अब शनैः शनैः उच्चतर, अधिक सूक्ष्म तथा उत्कृष्टतर होने लगती है। पशुओं की अपेक्षा मानव के आनन्द कहींसुन्दर हैं। अतः 'आनन्द' की अभिव्यक्ति में परिवर्तन होने लगता है। आप को एक विशाल आनन्द प्राप्त हो जाता है। उदाहरणतया एक कुत्ते के लिए सौदंर्य अर्थविहीन है, शालीनता अर्थ विहीन है। अतः मानव रुप में एक स्थिति विशेष पर पहुंचने तक आप अपना 'सत्' जो की 'चेतना' है, विकसित करते हैं। उसी सीमा तक आप अपना 'आनन्द' तथा सृजन–शीलता भी विकसित करते हैं। अब आप जान गए होंगे कि किस प्रकार प्रमात्मा की 'सृजनात्मकता,' 'आनन्द' एवं उसका 'प्रकाश' मानव के हृदय में 'आत्मा' बन कर पहुंचता है।

यह अति सुन्दर है।

शिव लिंग

लिंग ज्ञानातीत का द्योतक है, यह द्वैत तथा सृष्टि का अकारण–कारण है।

(कथा) लिंगोद्भव मूर्ती में बताया गया है कि एक बार भगवान ब्रह्मा तथा विष्णु में इस बात को ले कर कहा–सुनी हो गई कि सृष्टि का रचयिता कौन है। अचानक उनके सम्मुख अंतरिक्षीय अग्नि के रुप में शिवलिंग प्रकट हो गया। दोनों ने झगड़ना बंद कर लिया तथा लिंग का आदि एवं अन्त खोजने लगे। शूकर रूप में ब्रह्मा जी ने पृथ्वी को गहराई में खोदा और विष्णु जी ने उस ऊंचाई का पता लगाने का प्रयत्न किया। पर दोनों के हाथ कुछ न लगा।। यह जानकर कि उनसे ऊँचा भी कोई अन्य है, दोनों ने नम्रता पूर्वक लिंग–पूजन किया। प्रसन्न होकर हजारों बाहू तथा जंघाओं वाले शिव ने, सूर्य, चन्द्र तथा अग्नि जिनके तीन चक्षु थे, लिंग से प्रकट होकर ब्रह्मा तथा विष्णु को सम्बोधित किया तथा उन्हें बताया कि वे दोनों क्रमशः उनके दायें तथा बांयें कटि (कमर) से जन्में हैं। अतः वे दोनों एक ही तत्व हैं। इतना बताकर महादेव पुनः लिंग में समा गए।

नटराज के रूप में शिव

"परन्तु अपने मानव की दृष्टि में निराकार परमात्मा हजारों रूप धारण करते हैं। परमात्मा पावन तथा अविनाशी हैं। साक्षात में वे असीम तथा अथाह हैं। आनन्द विभोर होकर वे नृत्य करते हैं और उनके नृत्य से हजारों लहरें साक्षात हो उठती हैं। शरीर तथा मन को जब यह परम–आनन्द स्पर्श करता है तो यह इनकी पकड़ से बाहर हो जाता है"

कबीर

महादेव, महायोगी महेश्वर परमेश्वर भगवान शिव ही नटराज हैं, वही नृत्य साम्राट है। शिव अन्तरिक्षीय नर्तक हैं और अपने नृत्य के माध्यम से वे सृष्टि का उद्भव, पोषण तथा संहारण करते हैं। शिव के बायें उपरी हाथ में एक डमरू होता है तथा एक अग्नि जिह्वा। अग्नि के माध्यम से प्रलय आएगी। अतः सृष्टि तथा प्रलय भगवान शिव के हाथ में होती है। अज्ञान तथा अज्ञानान्धकार के प्रतीक भूत–अपोस्मरा पुरुषः के पृथ्वी पर पड़े शरीर पर नटराज नृत्य करते हैं। उनका नृत्य मानव को अज्ञान–पाश से मुक्त करके सांसारिकता से ऊपर उठने में सहायक है।

ॐ रूपी अग्नि शिखा तथा प्रकाश मंडल में वे नृत्य करते हैं। ॐ शब्द नाद ने ही सृष्टि में गति आरंभ की। त्रिशूल तीन गुणों तथा डमरू सृजन ताल का प्रतीक है।

उनके अन्य हाथ सुरक्षा तथा क्षमा के प्रतीक हैं।

रुद्र

रुद्र, शिव (आत्मा) की प्रलय शक्ति है।

क्षमा शक्ति उनका स्वभाव है। मानव होने के कारण शिव हमें क्षमा करते हैं। हम गलतियां करते हैं, गलत कार्य करते हैं, प्रलोभित होते हैं, हमारा चित्त अस्थिर है, अतः वे हमें क्षमा करते हैं। जब हम अपनी पवित्रता भंग करते हैं, चरित्रहीन कार्य करते हैं, चोरी करते हैं, ईश्वर विरोधी कार्य या बातें करते हैं तब भी वे हमें क्षमा करते हैं। हमारी अवांछित सुख सुविधाओं, इर्ष्याओं, वासनाओं तथा क्रोध कोभी क्षमा करते हैं। हमारे तुच्छ मोह, ईर्ष्या, मिथ्याभिमान तथा स्वामित्व भाव को भी वे क्षमा करते हैं। हमारे गर्व पूर्ण आचरण तथा गलत चीजों की दासता को भी वे क्षमा करते हैं।

परन्तु हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। हमें क्षमा करने पर वे सोचते हैं कि उन्होंने हमें एक अतिरिक्त अवसर दिया है। यह प्रतिक्रिया शिव के अन्तस में, क्षमा प्राप्त करके भी अधिक गलतियां करते रहने वाले लोगों के लिए, क्रोध की रचना करती है। विशेषतया आत्म साक्षात्कारी लोगों के लिए, क्योंकि आत्म साक्षात्कार बहुत बड़ा वरदान है। आपको प्रकाश प्राप्त हो गयाहै, फिर भी यदि आप अपने तुच्छ स्वार्थों से चिपके हुएहैं तो आपकी मुर्खता शिव के क्रोध को बढ़ावा देती है।

मैं कह रही हूं कि क्षमा प्राप्त करके आत्म साक्षात्कार पा लेने के उपरान्त भी जब लोग अपराध किए चले जाते हैं तो शिव अत्यधिक संवेदनशील तथा क्रुद्ध हो जाते हैं। अतः उनकी क्षमा घटने लगती हैं तथा क्रोध बढ़ने लगता है।

परन्तु उनके क्षमा करने पर यदि आप कृतज्ञ रहते हैं तो उनकी आशीष वर्षा आप पर होने लगती है। वे आपको अद्भुत क्षमा शक्ति प्रदान करते हैं। आपकी वासना को शान्त करते हैं। आपकी लोभवृत्ति को शान्त करते हैं। ओस की सुन्दर बूंदों की तरहउनकी आशीष–वर्षा हम पर होती है और हम सुन्दर फूलों की तरह खिल उठते हैं। उनके आशीष की धूप में दीप्तिमान हो जाते हैं।

हमें दुखः देने वाली सभी शक्तियों के विनाश के लिए अब वे अपने क्रोध तथा संहार शक्ति का उपयोग करते हैं। हर कदम पर तथा हर तरह से वे आत्म साक्षात्कारी लोगों की रक्षा करते हैं। नकारत्मक शक्तियां सहजयोगी पर आक्रमण करना चाहती हैं परन्तु शिव की महान सुरक्षा शक्ति उन आसुरी वृत्तियों का मर्दन करती है। उनकी चैतन्य –चेतना हमारा पथ प्रदर्शन करती है। शिव के सुन्दर आशीष का वर्णन बाईबल के तेईसवें भजन में इस प्रकार किया गया है

"परमात्मा मेरे चरवाहे (धर्म गुरु एवं पथ प्रदर्शक) हैं"। इस प्रकार पथ प्रदर्शक बन कर वे हमारी रक्षा करते हैं।

परन्तु शिव दुष्टों की रक्षा नहीं करते। उनका संहार करते हैं। सहजयोग में आ कर भी जिन्होंने अपना दुष्ट–स्वभाव नहीं त्यागा उनका विनाश हो जाताहै। सहजयोग में आकर भी जो ध्यान–धारणा नहीं करते तथा प्रगति नहीं करते तो या तो उनका विनाश हो जाता है या उन्हें सहजयोग से बाहर फेंक दिया जाता है। जो सहजयोगी परमात्मा विरोधी बातें करते

हैं तथा जिनका रहन–सहन एक सहजयोगी के उपयुक्त नहीं, परमात्मा उन्हें हटा देते हैं। अतः एक शक्ति द्वारा शिव रक्षा करते हैं तथा दूसरी शक्ति द्वारा वे दूर फेकते हैं। परन्तु जब उनकी संहारक शक्तियों का बाहुल्य हो जाता है तो हम कहते हैं कि " अब एकादश रुद्र कार्यान्वित हो गया है।"

जब स्वयं कल्की कार्य करने लगेगी अर्थात परमात्मा की संहारक शक्ति जब पृथ्वी से नकारात्मकता (बुराई) का संहार करके अच्छाई की रक्षा करेगी तो एकादश रुद्र की अभिव्यक्ति होगी।

अतः सहयजोगियों के लिए आवश्यकता है कि अपने वैवाहिक, सामाजिक जीवन या उन पर हुई परमात्मा की आशीष वृष्टि से संतुष्ट हो कर बैठने के स्थान पर तीव्रता से उत्थान प्राप्ति के लिए कार्य करें। परमात्मा ने जो हमारे लिए कार्य किया है, जो चमत्कार हम पर किए हैं उन्हें हम सदा देखते हैं। परन्तु हमें देखना है कि हमने अपने लिए क्या किया है और अपने उत्थान तथा विकास के लिए हम क्या कर रहे हैं?

(एकादश रुद्र पूजा इटली)

"निर्वाण प्राप्त करने पर आपकी क्या स्थिति होती है? आइये इसे देखें"।

मनोबुद्धयंहकार चिन्तानि नाहं
न च श्रोत्र जिह्वे न च घ्राण नेत्रे।
न च व्योमभूमिर्न तेजो न वायुः
चिदानन्द रूप : शिवोऽहं शिवोऽहं ॥ (1)

न चे प्राण संज्ञो न वै पञ्चवायुः
न वा सप्तधातुर्न वा पञ्चकोषः।
न वाक पणिपादं न चोपस्थपाय
चिदानन्दरुप : शिवोऽहं शिवोऽहं ॥ (2)

न मे द्वेष रागौ न मे लोभ मोहौ
मदो नैव मे नैव मात्सर्यभावः ।
न धर्मों न चार्थो नकामो न मोक्षः
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहं ॥ (3)

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं
न मन्त्रो न तीर्थः न वेदा न यज्ञः।
अहं भोजनं नैर भोज्यं न भोक्ताः
चिन्दानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहं ॥ (4)

न मे मृत्युर्न शंका न मे जाति भेदः
पिता नैव मे नैव माता न जन्मः।
न बन्धुर्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्यः
चिन्दानन्द रूप : शिवोऽहं शिवोऽहं ॥ (5)

अहं निर्विकल्पो निराकार रुपः
विधुत्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम।
सदा मे समत्वं न मुक्तिर्न बन्धः
चिदानन्दरुपः शिवोऽहं शिवोऽहं ॥ (6)

महाशिवरात्रि

" कौन आपका पिता है और कौन आपकी माता?
कौन आपका पति है और कौन आपकी पत्नी?
शिव ये सब बातें नहीं जानते।
शिव तथा उनकी शक्ति अविच्छेद्य हैं।
अतः वे अद्वैत है।

उनमें दूवित्य नहीं है। दूवित्व की अवस्था में ही आप कहते हैं 'मेरी पत्नी'। आप कहते हैं 'मेरी' नाक मेरे हाथ, 'मेरे' कान मेरा, मेरा, मेरा और इस तरह गहन अंधकार में फंसते चले जाते हैं।

जब आप कहते हैं 'मेरा' तब तक दिवत्व बाकी है। लेकिन मैं कहती हूं "मैं नाक" तो कोई द्वित्व नहीं। शिव शक्ति है और शक्ति शिव। कोई द्वित्व नहीं। पर हम पूरा जीवन द्वित्व में ही रहते हैं और इसी कारण मोह होता है। द्वित्व यदि न हो तो मोह का कोई अर्थ नहीं। यदि आप ही प्रकाश हैं और आप ही दीपक तो द्वित्व कहां है। आप ही यदि चांद हैं औरआप ही चांदनी भी हैं तो द्वित्व कहां है? सूर्य तथा धूप यदि आप ही है, शब्द तथा अर्थ यदि आप ही है तो द्वित्व कहां है?

परन्तु जब पृथक्करण है तो द्वित्व है। और इसी पृथक करण के कारण आपको मोह होता है। क्योंकि यदि आप ही वह होते तो किस प्रकार मोह में फंसते? क्या आपको यह बात समझ आई? क्योंकि आपमें तथा आपके में भिन्नता तथा दूरी है इसलिए आपको इससे मोह है। परन्तु यह 'मैं' हूं। अन्य कौन है? सभी

कुछ मैं ही हूं, दूसरा कौन है?
अतः अन्य कौन हैं? कोई नहीं!

यह तभी सम्भव है जब आपकी आत्मा आपके मस्तिष्क में आ जाए तथा आप विराट के अंग प्रत्यंग बन जाएं। जैसे मैने तुम्हें बताया विराट ही मस्तिष्क है।

समझने का प्रयत्न कीजिए कि यदि सागर में थोड़ा सा रंग डाल दिया जाए तो रंग का अस्तित्व ही मिट जाता है। आत्मा सागर की तरह है जिसमें प्रकाश है जब यह सागर आपके मस्तिष्क रूपी छोटे से प्याले में उड़लता है तो इस प्याले का अपना अस्तित्व समाप्त हो जाता है तथा सभी कुछ अध्यात्मिक बन जाता है! सभी कुछ! जिस भी चीज को आप छू दें वह अध्यात्मिक हो जाती है। रेत, भूमि, वातावरपण तथा स्वर्गीय जीव भी अध्यात्मिक हो जाते हैं। सभी कुछ अध्यात्मिक हो जाता है।

अतः यह सागर है जो कि आत्मा है। आपका मस्तिष्क सीमित है।

अतः आपके मस्तिष्क में निर्लिप्तता आनी चाहिए। आपके मस्तिष्क की सीमाएं टूटनी चाहिए ताकि जब आत्म सागर इसे भरे तो यह प्याला टूट जाए तथा इसका हर कतरा रंग जाए। आत्म प्रकाश ही आत्मा का रंग है। यह प्रकाश कार्य करता है सोचता है, सहयोग करता है, सभी कुछ करता है।

इसी कारण आज मैने शिव तत्व को मस्तिष्क में लाने का निर्णय किया।

मैं आपके साथ हूं। अतः एक प्रकार से आपको कोई पूजा करने की आवश्यकता नहीं। पर वह अवस्था प्राप्त करनी पड़ेगी और उसे प्राप्त करने के लिए आपको पूजा करना आवश्यक है। मुझे आशा है कि आपमें से अधिकतर मेरे जीवनकाल में ही शिवतत्व बन जाएंगे। पर ये मत सोचिए कि मैं आपको कष्ट उठाने को कह रही हूं। इस प्रकार के उत्थान में कोई कष्ट नहीं है। जब आप समझ जाएंगे कि यह पूर्ण आनन्द की अवस्था है उस समय आप निरानन्द बन जाएंगे। सहस्रार पर आनन्द निरानन्द कहलाता है। आप जानते हैं कि आपकी मां का नाम भी 'निरा' है। अतः आप निरानन्द बन जाते हैं।

तो आज की शिव पूजा का एक विशेष अर्थ है। मेरे विचार से जो भी हम बाह्य तथा स्थूल रूप में करते हैं यह सूक्ष्म रूप में भी होता है। मैं आपकी आत्मा को आपके मस्तिष्क में लाना चाह रही हूँ परन्तु आपके चित्त लिप्त होने के कारण कभी कभी मुझे इस कार्य में कठिनाई होती है।

स्वयं को निर्लिप्त करने का प्रयत्न कीजिए। क्रोध, वासना, लोभ आदि को कम करने का प्रयत्न कीजिए, इन्हें वश में करने का प्रयत्न कीजिए।

मैं जानती हूं कि आप में से कुछ अधिक कार्य नहीं करेंगे। बार बार मैं तुम्हें बताऊंगी कि मैं तुम्हारी सहायता करुंगी। पर आप भी इस कार्य को कर सकते हैं। करने का प्रयत्न कीजिए।

आज से हम सहजयोग को एक गहन स्तर पर करना आरंभ करते हैं। आप सबको गहनता में उतरने का प्रयत्न करना चाहिए। इसके लिए बहुत पढ़ा–लिखा या उच्च पदारुढ़ होना आवश्यक नहीं है। बिल्कुल भी नहीं।

जो लोग ध्यान–धारणा करतेहैं, समर्पण करते हैं, गहनता में जाते हैं वे वृक्ष की पहली जड़ों की तरह उदाहरण बन कर गहरे उतरते हैं ताकि लोक अनुसरण कर सकें।

"शिव सदा स्वच्छ, पवित्र तथा निष्कलंक हैं।"

श्री माता जी

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

श्री कुण्डलिनी पूजा (सारांश)

परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन
कबैला –21–6–92

हम चेतना के एक अति उच्च स्तर तक उठ चुके हैं। इस उत्थान ने हमें बहुत सी शक्तियां प्रदान की हैं। अध्यात्मिकता के इतिहास में पहले कभी लोगों के पास कुण्डलिनी जागृत करने की शक्ति न थी। पहले जागृति प्राप्त करते ही साधक बायें या दायें को झुक कर ऐसी शक्तियां प्राप्त करने का प्रयत्न करतेथे जो दूसरों के हित में न होती थी। बुद्ध ने स्पष्ट कहा है कि भविष्य में जब बुद्ध अर्थात मैत्रेय या त्रिगुणात्मिका मां का अवतरण होगा तभी अन्य सब का हित होगा। जिन लोगों के पास कुण्डलिनी का अपर्याप्त ज्ञान था वे इसका दुरुपयोग करने लगे तथा तान्त्रिक बन बैठे। तन्त्र कुण्डलिनी की यन्त्रावली है तथा स्वयं कुण्डलिनी यंत्र है।

हमें खोज निकालना चाहिए कि किस प्रकार हम कुण्डलिनी का पोषण कर सकते हैं। सर्वप्रथम तो आत्मसाक्षात्कारी तथा अन्य लोगों में बहुत अन्तर है। पहला अन्तर तो यह है कि आपने सहज ही यह शक्ति प्राप्त कर ली है। अन्य साधकों को हिमालय पर जाना पड़ा। वहां ठंड में तपस्या करनी पड़ी, उनमें से बहुत से मृत्यु को प्राप्त हुए। उन्हें फल खा कर या भूखे पेट-वहां गुफाओं में रहना पड़ता था। एक धोती से अपने शरीर ढांपते थे। गांवों में जाकर भिक्षा याचना करते थे। उन्हें कोई सुख–सुविधा नहीं थी। सारे सुखों का त्याग उन्हें सिखाया जाता था। पर किसी को भी आत्मसाक्षात्कार प्राप्त न होता और न ही वे कुण्डलिनी जागृतो कर सकते। उन साधकों में तथा आपमें यह अन्तर है कि आप शक्तियों की अभिव्यक्ति करते हैं अन्य लोगों को आत्म साक्षात्कार दे सकते हैं उन्हें रोग मुक्त कर सकते हैं, उनकी लहरियों का अनुभव कर सकते हैं। कुछ सहजयोगी वर्षा, सूर्य, चांद आदि को वश में कर सकते हैं। कुछ सहजयोगियों की प्रार्थना में अथाह शक्ति है। प्रार्थना मात्र से उन्होने बहुत लोगों की प्राण रक्षा की। उस समय के कुछ ऋषि मुनियों में यह शक्ति थी। पर उनकी शक्तियां प्रेम तथा करुणा पर आधारित न थी। आप पर यह विशेष कृपा है क्योंकि आपने जन–हित के लिए कार्य करना है। अपनी रक्षाकरने के लिए नाश करना उनका क्षेत्र था। अतः उन्होंने शपित करने की शक्ति विकसित की। आपमें वह शक्ति नहीं है। मैने आपमें वह शक्ति समाप्त कर दी है क्योंकि प्रेम, करुणा तथा नमृता ही हमारा आधार है। पुराने ऋषि अति क्रोधी होते थे तथा साधारण लोगों के विषय में बातचीत करते हुए कभी–कभी तो अत्यंत कठोर भाषा का उपयोग करते थे। उनमें से कुछ समाज की भर्त्सना तो नहीं करते थे पर अपने आप से संतुष्ट वे उन वरदानों के विषय में लिखा करते थे जो उन्हें प्राप्त थे।

आपका एक नया–आयाम है तथा आपने अपनी शक्तियां जन हित के लिये उपयोग करनी है। आपके प्रति आपकी मां के प्रेम तथा करुणा के कारण आपकी कुण्डलिनी भी सहज ही में जागृत कर दी गई। अपने अन्दर यदि आप निर्मल प्रेम तथा करुणा भाव विकसित करें तभी आपकी कुणडिलिनी का पोषण हो सकता है। पहले स्थान पर मैने निर्मल शब्द का उपयोग किया है। अर्थात आपको अबोध होना होगा। यदि आप अबोध नहीं है तो आपको कुछ समस्याएं होंगी। जैसे वासना तथा आपका प्रेम किसी व्यक्ति विशेष तक सीमित होना। कुण्डलिनी ऐसी नहीं है। वह उठती है तथा हर चक्र पर जाती हैं, किसी चक्र–विशेष से लिप्त नहीं होती। वह केवल अपने उत्थान के विषय में ही चिन्तित होती है। इसी प्रकार सहजयोगी को भी किसी सम्बन्धी विशेष से लिप्त नहीं होना चाहिए। यह संभव है। आपको बुद्ध के शिष्यों की तरह बनना है। उदाहरणतया पेड़ का रस उठता है, पेड़ के भिन्न भागों में जाता है और तब या तो वाष्पीकृत हो जाता है या वापिस आ जाता है। उत्थान मार्ग खुला रखना चाहिए। यदि मार्ग खुला हो तो कुण्डलिनी बिना किसी कठिनाई के उत्थित हो सकती है। पर किसी वस्तु विशेष से लिप्त होने की अवस्था में यह मार्ग अवरुद्ध हो सकता है। कुछ लोग अपने परिवार तथा मातापिता से लिप्त हो जाते हैं। यह सब बनावटी सम्बन्ध हैं। कल यदि आप पर कोई विपत्ति आ जाए तो यह सम्बन्ध व्यर्थ हैं। इतना ही नहीं वही सम्बन्धी आपकी स्थिति का लाभ उठाएंगे। आप अपने परिवार धर्म या देश पर निर्भर नहीं रह सकते क्योंकि अब आपका ब्राह्माण्डीय–अस्तित्व है। आप अब बनावटी सम्बन्धों से जुड़े हुए नहीं, अध्यात्मिक सम्बन्धों से जुड़े हुए हैं। इस तथ्य को अपने अन्तस में स्थापित करना होगा। पर इस का अभिप्राय यह भी नहीं कि हम अपने पति पत्नी तथा बच्चों को त्याग दें। इसका अर्थ है कि हम अपने बंधन तथा बुराइयां त्याग दें।

हममें सब प्रकार के बंधन है। कुछ अच्छे बंधन भी यदि हों तो उन्हें भी त्याग देना चाहिए क्योंकि हैं तो वे भी बंधन ही। हमें उनका स्वामी होना चाहिए। उदाहरणतया भारतीय लोगों

का एक अच्छा बंधन है कि प्रातः स्नान करना चाहिए। पर यह बंधन भी तो दासत्व है। अच्छा या बुरा जैसा भी बंधन हो इसे स्पष्ट देख लेना चाहिए। इसके विपरीत दिशा में कहीं ऐसा भी न हो कि मैं स्नान ही नहीं करुंगा। इसका अर्थ है कि यदि सुबह का स्नान नहीं सुहाता तो शाम को कर लूंगा या कभी–कभी नहीं करुंगा। दासत्व नहीं होना चाहिए। पूर्व रुपेण बन्धन मुक्त होने पर कुण्डलिनी उत्थित होती है। हमें स्पष्ट देखना चाहिए कि हमें पारिवारिक बंधन है। यदि आप का जन्म इसाई परिवार में हुआ है तो आपका झुकाव ईसा की ओर अधिक है। हिन्दु परिवार से होने पर आप गीता तथा वेदों से लिप्त होते हैं। इस प्रकार असंतुलन की रचना होती है क्योंकि सभी धर्मों तथा शास्त्रों के प्रति हमारा सम दृष्टिकोण होना चाहिए। महात्मा की यही पहचान है।

आत्म साक्षात्कार के बाद आप समझने लगते हैं तथा अपने इर्द–गिर्द के समाज से ऊंचे उठ जाते हैं एक फ्रैंच कहेगा कि यह कट्टर फ्रैंच है और हिन्दु कहेगा कि यह कट्टर हिन्दु है। आपमें देश की कट्टरता नहीं रह जाती। आप एक ब्रह्माण्डीय अस्तित्व है तथा उसी प्रकार आप रहते हैं। आप यह भी समझ जाते हैं कि देह के रंग का विश्व में कोई महत्व नहीं। पर लोग गोरे कालों के आधार पर किसी को पसन्द करने लगते हैं या घृणा करने लगते हैं। किसी धर्मान्ध व्यक्ति से यदि आप दूसरे धर्म के बारे पूछे तो वह उसे सबसे बुरा तथा अपने धर्म को सर्वोत्तम बताएगा। ब्रह्माण्डीय अस्तित्व होने के नाते आप में करुणा जागृत होनी चाहिए कि परमात्मा की कृपा से आप वास्तव में इतने ऊंचे उठ पाए। आप आत्म साक्षात्कारी लोग है अतः स्वभाववश आपको सब परिवर्तन लाने होंगे। त्यागी हुई चीजों से अपना मुकाबला करने का कोई लाभ नहीं। अंडे से आप पक्षी बन चुके है। अंडे से अब आप अपना मुकाबला मत कीजिए। इसी प्रकार आत्म साक्षात्कारी व्यक्ति होने के अपने आत्म–सम्मान, अवस्था तथा पूर्णतया परिवर्तित अपने जीवन के लक्ष्य को हमें स्वीकारना तथा समझना चाहिए। आत्म साक्षात्कार आपको इसलिए प्राप्त हुआ है कि आप इसे पूरे विश्व में फैलाएं तथा विश्व का उद्धार करें। एक बार जब आप इस बात को समझ जाएंगे तो स्वतः ही आप उत्तरदायित्व ले लेंगे और कुण्डलिनी उठ जाएगी। मैं ऐसे लोगों को जानती हूं जो बोल न पाते थे, मंच के नाम से उन्हें डर लगता था, पर अब वे धुरन्धर वक्ता है। बहुत सों ने गाना तथा कविता लिखना शुरु कर दिया है। इन सब सुन्दर चीजों की अभिव्यक्ति को आप स्वीकार करें। भय को पूर्णतया त्याग दे।

बांयी ओर को झुके व्यक्ति को जानना चाहिए कि वह एक साक्षात्कारी व्यक्ति है और कोई न तो उसे छू सकता है और न मार सकता है। जिस प्रकार कार्य हो रहे हैं उनका आनन्द आप लेंगे। संस्कृत की कहावत हैं "विनाशकाले विपरीत बुद्धि" अर्थात मूर्खताओं से ही विनाश होता है। अपनी मूर्खता से ही दुष्ट अपना नाश करते हैं। आपको संहारक शक्तियों की आवश्यकता नहीं है। सर्व व्यापक परमात्मा की शक्ति ही सारा कार्य कर देगी।आप दुष्ट व्यक्ति को क्षमा कर दें। क्षमा करते ही आपका दायित्व परिवर्तित हो जाता है और तब कुण्डलिनी उठती है। आपके मन में उसके प्रति कोई विरोध या दुर्भावना अनावश्यक है। उस पर हंसिए क्योंकि वे मूर्ख हैं। आपने सहजयोग के विनोद को समझना है। तब आप इन विदूषकों के आचरण को समझ पाएंगे। किसी भी मानव से डरने की कोई बात नहीं। एक बात आपको अवश्य पता होनी चाहिए कि आप साक्षात्कारी व्यक्ति है, आपने सत्य को देखा है, आप प्रकाश में हैं अतः वे (दुष्ट लोग) आपका विरोध करेंगे। सभी सन्तों को कष्ट उठाने पड़े। पर अब कोई कष्ट नहीं। बस आप में इस विनोद का आनन्द लेने की योग्यता होनी चाहिए। दुष्प्रवृत्ति लोगों के प्रति आपका दृष्टिकोण यदि इतना हल्का होगा तो सभी भय तथा बांयी ओर के झुकाव भाग जाएंगे। ये सब बाधाएं, भूत, तान्त्रिक क्या हैं? कुछ भी नहीं! आप इतने शक्तिशाली हैं। जब तक आप भयभीत हैं कुणलिनी उठेगी नहीं क्योंकि डरपोक लोगों के लिए यह नहीं उठती। लोग अंधेरे से डरते हैं, उन्हें भय रहता है कि कहीं कोई उन पर आक्रमण न कर दे। परन्तु एक वास्तविक सहजयोगी निर्भय होता है क्योंकि वह जानता है कि उसके इर्द गिर्द गण तथा देवदूत हैं। कोई उसे छू नहीं सकता। एक बार यह भय समाप्त हो जाने पर आपकी सारी धूर्तता, षड्यंत्र ईर्षायें लुप्त हो जाएंगी। इस प्रकार कुण्डलिनी भली भांति उठेगी।

कुण्डलिनी को उठने से रोकने वाली एक अन्य समस्या हैं आपका अहँ। यह भयानक है। आप यदि ईसा के अनुयायी हैं तो आप में कैसे अहं हो सकता है? क्षमा पूर्णतया स्वाभाविक होनी चाहिए। क्रोध की तनिक सी तरंग भी नहीं होनी चाहिए क्योंकि आप इतने शक्तिशाली हैं। आपको यदि आज्ञा की पकड़ है तो आप स्वयं को हानि पहुँचा रहे हैं। जिगर से आकर आज्ञा पर जम जाने वाले इस क्रोध का ध्यान रखा जाना आवश्यक है। पूरी पाश्चात्य सभ्यता ने दो समस्याओं की रचना की। प्रथम है लोभ की उपलब्धि। जितना अधिक लोभ आपमें होगा उतना ही अधिक मशीनें चल सकेंगी, प्लास्टिक का विकास हो सकेगा और आप पर्यावरण सभाए कर सकेंगे। प्राचीन समय में इन देशों में कला का सृजन होता था, कलाकारों का जन्म तथा उनकी देखभाल होती थी। भारत में भी राजा लोग कलाकारों को

आश्रय देते थे। मोजार्ट को महारानी ने अपने सामने बजाने के लिए बुलाया। कर वसूली करने के साथ–साथ सरकार कालाकरों, संगीतज्ञों, चित्रकारों तथा कला सृजन करने वालों की देखभाल भी करती थी। उपलब्धियों को कला की उपलब्धियों तक ले जाना होगा। कला भी प्लास्टिक नहीं होनी चाहिए। हमें वास्तविक हस्तकला की वस्तुएं खरीदनी चाहिए। गहन, शास्त्रीय संगीत, और परमात्मा के भजन गाए जाने चाहिए; मदमस्त , लोभी तथा वासनामय बनाने वाला सस्ता संगीत नहीं होना चाहिए।

कुगुरुओं के चक्कर में पड़ कर पश्चिम के लोग नशीली दवाएं सेवन करते हैं। भले बुरे की पहचान करने के लिए उनमें विवेक नहीं है। धीरे–धीरे पश्चिम का यह अहं सड़न की स्थिति में पहुंच गया। यह लोभ वृत्ति है। यदि किसी की पत्नी सुन्दर है तो सभी पुरुषों को उसे देखने का अधिकार है तथा उसे सभी पुरुषों को देखने का। जो व्यक्ति आपका पति नहीं उसे देखने का क्या लाभ ? इस तरह पूरा जीवन-चरित्र हीनता से ढक गया। अपनी आयु का सम्मान भी वे भूल गए हैं। एक नब्बे वर्ष की स्त्री के प्रेम सम्बन्ध अपने नाती या पोते से हैं। कला भी अनैतिका की ओर बढ़ गयी है। पश्चात्य समाज में मर्यादा का पूर्णाभाव है। कुण्डलिनी अपनी मर्यादा में उठती है। आपकी मर्यादाएं यह सम्मान वापिस ले आती है। आप मानव हैं। पशुओं की तरह न रहें। परमात्मा में आपको अवमानवीय बनने के लिए नहीं बनाया, आलौकिक मानव बनने के लिए बनाया है।

दूसरी अति बुरी वृत्ति यह है कि लोग दूसरे लोगों पर रोब जमाते हैं। वे सोचते हैं कि ऐसा करने का उन्हें अधिकार है। अंग्रेजों ने हमारे देश पर तीन सौ वर्ष तक अत्याचार किए। भौतिक पदार्थों के लिए उन्होंने यह सब किया पर हमसे अध्यात्मिकता उन्होंने न ली। जापानी भी आपके पद–चिन्हों पर चल रहे हैं। यह आक्रामकता पूरे समाज को विनाश शक्ति बना डालती है। जैसे युद्ध तथा लड़ाई। यह आक्रामकता तीसरे विश्व में भी प्रवेश कर गयी है।पर आनन्द प्रदान करके कुण्डलिनी इस नकारात्मक वृत्ति का वध कर डालती है। आप हर चीज में आन्नन्द लेते हैं। जंगल में होते हुए भी आप आनन्द लेते हैं। आप अपनी आत्मा का सुख ढूंढते हैं क्योंकि इसी में आपको आनन्द मिलता है। उस आनन्द में आपको किसी अन्य चीज की आवश्यकता नहीं होती। छोटी–छोटी चीजों में आनन्द देखिए। वे सोचते हैं कि वे किसी के भी प्रति आक्रामक हो सकते हैं, किसी का अपमान कर सकते हैं, किसी की भी पत्नी या बच्चे को ले जा सकते हैं। परिणाम वश प्रेम तथा करुणा समाप्त हो जाती है। इसी के कारण ही आपमें मैं और मेरे का भाव विकसित हो जाता है। मेरा बच्चा, मेरा देश। आप कैसे कह सकते हैं कि यह आपका देश है ? एक छोटा सा फूल तो आप बना नहीं सकते। अतः यह परमात्मा का है। परमात्मा ने ही इसे बनाया है। सहजयोगियों में भी यह 'मेरा' अभी तक है। विशाल हृदय व्यक्ति के लिए तो पूरा ब्रह्माण्ड ही उसका है। इस तरह का हृदय जब अनुभव करते है तो कुण्डलिनी हठात ऊपर आ जाती है क्योंकि सहस्रार हृदय चक्र ही है। सहस्रार के पकड़े जाने का प्रश्न ही नहीं होता। सहस्रार खुला रखने के लिए विवेक तथा बुद्धि विकसित कीजिए कि 'मेरा कुछ नहीं' सभी कुछ परमात्मा का है। परमात्मा जो चाहे उन्हें करने दीजिए। तुच्छता छोड़िए। मैने ऐसे सहजयोगी देखे हैं जो अपने परिवार से ही बधें रहते हैं। सभी आपके हैं। क्योंकि सहजयोगियों की कुण्डलिनी प्रेम से बनी है। पवित्र प्रेम की केवल एक ही पवित्र इच्छा है– प्रेम करना। सभी को समान रुप से प्रेम करें। यदि आप यह कहते हैं कि ऐसा करना कठिन है तो अभी आपने वह उच्चावस्था प्राप्त नहीं की। अपने हृदय को विशाल कीजिए। आप कभी खोएंगे नहीं। इस पर कमी वाद–विवाद न करें, बुद्धि, पुस्तकें तथा अन्य बातों से इसे न जांचे, अपने हृदय से जांचे। तब आप समझेंगे कि प्रेम करने से अधिक महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं। सभी को समान प्रेम करना ही सर्वोच्च है। प्रेम में आपको किसी से कुछ कहना होता है।

कुण्डलिनी निर्वाज्य है, इसे बदले में कुछ नहीं चाहिए। पवित्रता की जिस सरिता ने हमारी जागृति इतनी दया तथा कोमलता से की है, वह शक्ति हमें स्वयं को उसी की तरह से बनाने के लिए उपयोग करनी चाहिए क्योंकि पूरे विश्व का उद्धार करने के लिए उसने हमें आत्म साक्षात्कार दिया है। सभी सहजयोगियों को चाहिए कि दूसरों को साक्षात्कार दें नहीं तो उनकी कुण्डलिनी वापिस चली जाएगी। सहजयोग अंश कालिक (पार्ट–टाइम) नहीं है। जहां भी आपको सहजयोग के बारे में बात करने का अवसर मिले आपको चूकना नहीं चाहिए। आपने ही इसे कार्यान्वित करना है। आपने आत्मसाक्षात्कार देना है।

परमात्मा आपको धन्य करें।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

श्री महालक्ष्मी पूजा (सारांश)

परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन
कालवे –30–12–92

आज के शुभ दिन जिस विशेष पूजा के लिए हम यहां आएं हैं इसे महालक्ष्मी पूजा कहा जाना चाहिए क्योंकि इसका सम्बन्ध इस देश तथा पूरे विश्व के उद्योगों से है। बिना परमात्मा से जुड़े मानव के उद्यम पूर्णावस्था तथा पद को नहीं प्राप्त कर सकते। यही काारण है कि पश्चिमी देशों के अति चतुर माने जाने वाले लोग भी समस्या ग्रस्त है। कारण उनका असंतुलन है। वे नहीं जानते कि परमात्मा की शक्ति ही सभी कार्य करती है और जब आप इस शक्ति की अवमानना करते हैं तो यही परिणाम होता है। इस प्रकार के उद्यम के लिए हमें पृथ्वी मां से बहुत से पदार्थ लेने पड़ते हैं। यदि हम यह सब किसी उचित लक्ष्य, रचनात्मक कार्य के लिए या दूसरों के हित के लिए लेते हैं तो संतुलन बना रहेगा। धरा मां सोच सकती है । एक बार उत्पन्न किए पदार्थ को वह अधिकाधिक उपजा सकती है। विवेकशील तथा परमात्मा से तारतम्य वाले लोगों के लिए यह उपजा सकती है। स्वार्थ के लिए धन कमाने वाले लोगों के लिए पृथ्वी नहीं उपजाती। हमें पूर्णता में सोचना चाहिए। सोचना चाहिए कि इस कार्य को करने से क्या लाभ हुआ। विश्व में इतना अधिक उद्योगीकरण हो गया है पर अध्यात्मिकता का विकास नहीं हुआ। लोग प्रसन्न नहीं है। उनके बच्चे तथा परिवार कष्ट भोग रहे हैं। अतः संतुलन का होना आवश्यक है। हमारे देश में, परमात्मा की कृपा से उद्योगीकरण की गति इतनी अधिक नहीं है। उद्योगों को हस्तकला के साथ साथ चलना है। यदि ऐसा नहीं होगा तो कलाकारों को कौन देखेगा? कला तथा उद्योगों में संतुलन आवश्यक है। परीश्रमी लोगों के लिए कला अति शांति तथा सुख–प्रदायी है। सभी उद्योगों को कुछ कलात्मक गतिविधियां करके कलात्मक वस्तुएं उत्पन्न करनी चाहिए। उद्योगों का तिरस्कार कभी नहीं होना चाहिए। जैसे सारे उद्योगपति चोर हों तथा राजनीतिज्ञ महात्मा। उद्योगपति यदि साक्षात्कार प्राप्त कर लें तो अपने देश तथा समाज के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं।

महालक्ष्मी की भिन्न मुद्रायें है। उनका दायां हाथ अभय–मुद्रा में उठा होता है। वैभवशाली लोगों का दायां हाथ अपने आश्रितों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए होना चाहिए। भारत में धनी लोगों की सदा निंदा की गई है, पर यह उचित नहीं। गरीब लोग भी बुरे हो सकते हैं। धनवान तथा निर्धन लोगों के बीच संतुलन तथा सूझ–बूझ होनी चाहिए। कुछ समय उपरान्त आप देखेंगे कि वैभव या निर्धनता को अधिक महत्व नहीं दिया जाएगा। आत्म–वैभव तथा परमात्मा के साथ एकाकारिता ही सभी के लिए महत्वपूर्ण वरदान होंगे। अभी तक हम भौतिक उपलब्धियों के लिए संघर्ष कर रहे हैं तथा व्यर्थ की चिन्ताओं में फंसे हुए हैं। विकास के इस रथ को यदि आप मध्य (संतुलन) में रख सके तो पूर्ण समन्वय, शान्ति, आनन्द तथा प्रेम मय विश्व की रचना हम कर सकेंगे। आप ही लोगों को यह सब करना है।यह रथ तथा घोड़ों की तरह हैं घोड़ों को चलाया जाना है। कोचवान तो रथ को नहीं चलाता। इसी प्रकार आप भी अपने उत्तरदायित्व को समझें कि हम महानतम कार्य कर रहे हैं। पूरे समाज का हित हमें सोचना है तथा देखना है कि क्या इस कार्य को करने की सामर्थ्य हममें है? हम अभी तक इतने तुच्छ हैं और सांसारिकता के बंधनों में बंधे हुए हैं। हम हर तत्व को, वातावरण को भी वशीभूत कर सकते हैं।

पूर्वत्व क्या है? इस पूर्णत्व में ऐसे विश्व का सृजन होना चाहिए जहां लोग भय विहीन हों। व्यर्थ की इस परेशानी का कारण भय है महालक्ष्मी की सुरक्षा में आप भय से परे हो जाते हैं । इस बात का यदि आप विश्वास नहीं करना चाहते हैं तो कोई इलाज नहीं। किसी भी साहसिक कार्य को करते हुए आपको भयभीत नहीं होना चाहिए क्योंकि परमात्मा आपके साथ है। आप बस कोशिश कीजिए। अहँ के प्रभाव में जब आप कोई कार्य करते हैं तो भय–जाल में फंस जाते हैं। मैने देखा है कि अंहकारी लोग ही अत्यंत भय ग्रस्त होते हैं। क्योंकि वे सदा दूसरे लोगों को भयभीत करते रहते हैं अतः उन्हें भी अपना यही अन्त नजर आता है। अंग्रेज जब भारत में थे तो भारतीय उनसे आतन्कित थे। अब मैं देखती हूं कि सारे अंग्रेज परिवार एक दूसरे से भयभीत है। जब कोई अंहकारी व्यक्ति किसी को आतंकित करता है तो आइनें में उसे अपना प्रतिबिम्ब भी आंतकित होता हुआ दिखाई देता है। इस प्रकार भय हम पर हावी हो जाता है तथा हम कई मूर्खता पूर्ण कार्य करने लगते हैं। अहँ ही भय को जन्म देता है। अहँकार रहित व्यक्ति क्योंकि किसी को हानि ही नहीं पहुंचाता अतः, उसे किसी का भय नहीं होता। ऐसे स्त्री या पुरुष की सुरक्षा परमात्मा करते हैं। जब मैं सर्व–हित की बात करती हूं तो परमात्मा उसे अपेन हाथ में ले लेते हैं। यदि आप सर्वशक्तिमान परमात्मा पर विश्वास करते हैं तो आपके मन से भय पूर्णतया

समाप्त हो जाना चाहिए।

जब हम निर्भिक होने को कहते हैं तो दूसरी चरम–सीमा आती हैं। तो हम सभी कुछ मन–मर्जी से कर सकते हैं, किसी को बताए बिना हम कुछ भी कर सकते हैं। आप को परमात्मा से आज्ञा लेनी चाहिए, उसके दरबार में सूचना देनी चाहिए। परन्तु आप तो स्वयं को ही परमात्मा मान बैठते हैं। आप परमात्मा नहीं हैं। इस प्रकार का निरंकुश आचरण सहजयोग के लिए, आपके लिए तथा सभी के लिए भयानक है। मैं यदि आपको कुछ बताती हूं तो 99% तो समझ जाते हैं कि यह आपके हित के लिए है। परन्तु एक प्रतिशत लोग ऐसे हैं जिनमें अहँ के कारण प्रतिक्रिया हो सकती है। वे अपने हित के बारे नहीं सोचते। वे नहीं समझते कि यदि मैं उन्हें कुछ कर रही हूं तो यह उन्हें पूर्णत्व प्रदान करने के लिए है। इसके विपरीत वे एक गलत दृष्टिकोण अपना लेते हैं जो मूर्खता है। अतः अनावश्यक रूप से अपने विनाश की चरम–सीमा तक जाने वाले इन लोगों के प्रति हमें उदासीनता पूर्ण रुख अपनाना चाहिए। दूसरा कौन आपको बताएगा? केवल मैं ही आपको आपके दोष बता सकती हूं, और आपके कुकर्म बता सकती हूं। तभी आप परिवर्तित हो सकते हैं। यह दूसरी प्रकार की प्रतिक्रिया हैं, अर्थात उन्हें अपने, अपने बच्चों के, देश के तथा विश्व के हित की बात में कोई रुचि नहीं। आप सहज योग में क्यों आए? स्वयं से प्रश्न कीजिए। अपने उत्थान के लिए। पर उत्थान का लक्ष्य क्या है? मान लो हम एक टयूब–लाइट लाते हैं। यदि यह प्रकाश ही नहीं देती तो उसे लाने का क्या लाभ ? इसी प्रकार यदि आप प्रकाश नहीं फैलाते तो आपके सहजयोग में आने का क्या लाभ है? आपमें से कोई भी क्षुद्र व्यक्ति नहीं है। पर आप समझते नहीं कि आप क्या है। व्यर्थ के बंधनों में फंसे हुए आप अपने को बेकार मान बैठते हैं। अपने अन्दर यदि आप पूर्ण–हित को अपना लें तो इसकी अभिव्यक्ति बाहर भी होगी।

अंतः चित्त अति महत्वपूर्ण है। चित्त को आपकी अपनी पूर्णता तथा हित पर होना चाहिए। लोग यह बात भूल बैठते हैं तथा अपने दोष देखने के स्थान पर दूसरे के दोष देखने लगते हैं। यदि आप दूसरों को देखते रहेंगे तो क्या पाएंगे? यदि कोई व्यक्ति गलत है या अपराध कर रहा है और आप उस पर चित्त डालते हैं तो आपको मात्र उसका पता चल जाएगा। परन्तु यदि आपके अन्दर कोई दोष है तो आप उसे दूर कर सकते हैं। दूसरों के दोष देखना भारतीय विशेषता है। लोग नहीं देखते कि उनमें क्या दोष है। हर समय उनका चित्त दूसरों के दोष खोजने में लगा रहता है। तो कैसे हम सुधर सकते हैं? दूसरों में दोष देखने से तो आप अधिक दोषी हो जाते हैं। लोग किसी को कुछ करते देखते हैं तो कहतें हैं "श्री माताजी, वह सहजयोगी हैं फिर भी ऐसा करता है।" कौन कहता है वह सहजयोगी है। आपने अपनी पदवी पा ली है। कोई भी स्वयं को सहजयोगी कह सकता है, मैं उसे रोक तो नहीं सकती। मैने कई वर्षों तक कुछ पागल लोगों को देखा है जो पागल हैं पर सहजयोगी हैं। आपको अपने लिए देखना है कि मैं सहजयोगी हूँ कि नहीं? आपको सहजयोग की संस्कृति अपनानी चाहिए। सहजयोग की महानतम संस्कृति परस्पर प्रेम है। यदि एक सहजयोगी दूसरे सहजयोगी से प्रेम नहीं करता तो हम सहजयोगी नहीं हो सकते। गहनता में जाकर सोचिए कि हम कहां उत्पन्न हुए हैं। हम ऐसे युग में जन्में हैं जब एक महान कार्य हो रहा है। इस युग का वर्णन शस्त्रों में है। हम इस युग में जन्मे, इस महान कार्य के कर्त्ता बने और यह हमारे माध्यम से कार्यान्वित हो रहा है, तो हमें क्या करना चाहिए? चार व्यक्ति यदि एक मेज को उठा रहे हैं और उनमें से एक यदि उसे छोड़ दे तो मेज गिर जाएगी। एक बड़े समुद्री जहाज में एक छोटा सा छेद भी जहाज के डूबने का कारण बन सकता है क्योंकि पूरा जहाज एक ही है। हम सब भी एक है। इसका हमें ध्यान रखना है।

परस्पर प्रेम करना महानतम सहजधर्म है। नितान्त प्रेम। हम उस स्थिति पर पहुंच गए है जहां हम सब एक हैं। किसी एक सहजयोगी या सहजयोगियों के समूह के विचार मात्र से आपका आनन्द से भर जाना निरन्तर आनन्द का एक मार्ग है। क्योंकि वे आनन्द तथा शान्ति के रुप में हैं। यह समझ आ जाने पर ही हम सहजयोगी हैं। मैं जानती हूं कि आप मुझे बहुत प्रेम करते हैं पर जब तक आप परस्पर प्रेम नहीं करते मैं कैसे प्रसन्न हो सकती हूं?

थोड़ा सा स्वार्थी तथा आत्म केन्द्रित बनाने वाले लक्ष्मी तत्व से जब आपका महालक्ष्मी तत्व जागृत हो जाएगा तो आप सभी सीमाओं (बंधनों) से ऊपर उठकर उच्च–मूल्यों की प्रणाली को खोजने के नए आयाम में प्रवेश कर जाएंगे। आप शाश्वत प्रेम खोज रहे हैं। वास्तव में हम उन्हें इसलिए प्रेम करते हैं कि वे हमारे अंग प्रत्यंग हैं। उनसे हमारी एकाकारिता है। महालक्ष्मी की पूजा करने वालों को देखना चाहिए कि कितने लोग वास्तव में महालक्ष्मी के पुजारी हैं? यह कितनी महान अनुभूति है। महाराष्ट्र में कोई सहजयोगी यदि दूसरे जिले में सहजयोग प्रचार के लिए चला जाए तो जिला–नेता उसका सम्मान तथा स्वागत करने के स्थान पर उससे झगड़ा करने लगता है। यह कैसे हो सकता है? नामदेव जब पंजाब गए तो गुरुनानक ने उनका सम्मान किया तथा उन्हें पंजाबी भाषा में लिखने को कहा। उन्होंने महाराष्ट्र के सभी महान सन्तों की वाणी को गुरुग्रन्थ में स्थान दिया क्योंकि

वे जानते थे कि ये सब महान साक्षात्कारी आत्माएं हैं। मेरे लिए आवश्यक है कि आप सब परस्पर प्रेम करें। आपका परस्पर प्रेम मुझे अत्यंत आनन्द, उपलब्धि तथा मेरे जीवन की साध–पूर्ति देगा। यदि कोई व्यक्ति गलत है तो मुझे लिखिए, मुझे लहरियों से भी पता चल जाएगा। मुझे कोई धोखा नहीं दे सकता।

कुछ लोगों का वायुयान यदि छुट रहा है तो ठीक है आप अन्य सहजयोगियों के साथ रहिए, आप तो नहीं खो गए हैं। वायुयान या समुद्र में जहां भी आप हैं ठीक हैं। क्या अन्तर पड़ता है? आप जहां हैं, सहजयोगियों के साथ हैं, तो क्या चिंता है? लोग मुझसे पूछते हैं" मां आप इतनी यात्रा करते हैं, आप थकते नहीं ?" "मैं केवल सोचती हूं कि मैं हूँ। मैं बस वहां हूँ।

विचार यह होना चाहिए कि 'मैं अन्य लोगों से उतना प्रेम क्यों नहींकर सकता जितना स्वयं से करता हूं'। शाश्वत प्रेम आपको वह आत्म विश्वास तथा उच्च–पद प्रदान करेगा। संतों ने आपके लिए कष्ट उठाए। ईसा और मोहम्मद साहब ने आपके लिए क्यों कष्ट झेले? ग्यानेश्वर जीने क्यों ग्यानेश्वरी लिखी? उन्हें क्या मिला? अपने शाश्वत प्रेम की अभिव्यक्ति कर पाने का संतोष। आप क्यों नहीं ऐसा करते? यदि आप चाहते हैं कि महालक्ष्मी तत्व सदा प्रज्जवलित रहे तो आप परस्पर तथा सभी सहजयोगियों को प्रेम करें। मुझे आशा है कि आप मेरी बात को समझेंगे।

परमात्मा आप पर कृपा करें

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

श्री हँसा चक्र पूजा (सारांश)

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन
वैंकोवर कैनेडा–13–9–92

"आज हम हँसा चक्र की पूजा करने वाले है। अब तक हम सदा किसी देवता की पूजा करते हैं, पर दूसरी बार आप हँसा चक्र की पूजा कर रहे हैं"। यह चक्र दोनों भृकुटियों के मध्य में स्थित हैं। दोनों आंखे बायें तथा दायें ओर की द्योतक है। हमारे चक्षु, नासिका, जिह्वा, दांत तथा गला इस चक्र का मार्ग दर्शन करते हैं। यह चक्र अति महत्वपूर्ण है क्योंकि इन सब अंगों की देखभाल करने वाली सोलह पंखुड़ियों की देखभाल विशुद्धि चक्र करता है। कुडलिनी को विराट से संपर्क स्थापित करने के लिए भी हँसा चक्र से गुजरना पड़ता है।"

" हँसा चक्र हमारी चेतना में मंगलमयता की अभिव्यक्ति का केन्द्र बिन्दु है। इसका अभिप्राय यह है कि हँसा चक्र के जागृत स्थिति में होने पर हम तुरन्त जान जाते हैंकि क्या शुभ है और क्या अशुभ । हमें दैवी विवेक प्राप्त हो जाता है। मेरे विचार से भले–बुरे और सृजनात्मक तथा विध्वसंक में अन्तर करने का विवेक आनुवंशिकी (जैनेटिक्स) का ही एक भाग है।"

"पर बंधन तथा अहँ एकत्र करने वाले इन सभी अंगों द्वारा हम यह विवेक बिगाड़ सकते हैं। इसी कारण यह चक्र अति कोमल तथा संवेदनशील है। इस चक्र के मुकाबले में अन्य चक्र बाह्य अंगों से इतना अधिक नहीं जुड़े हुए हैं और न ही इतनी सूचना प्राप्त करते हैं। उदाहरणतया आँखे अति महत्वपूर्ण हैं। इन्हें आत्मा की खिड़की कहा जाता है। आपने देखा है कि जब कुण्डलिनी उठती हैं और आत्मा चमकने लगती हैं तो आंखों की पुतलियों का विस्तारण होता है, आपकी आखों में एक चमक आ जाती है तथा आप एक निष्कलंक बालक सम प्रतीत होते हैं।

विवेक हीनता पूर्वक, वासना तथा लोभमय होकर यदि हम अपनी आंखों को उपयोग करें तो हमारा हँसा चक्र बुरी तरह खराब हो सकता है। अपने जीवन में एक बार यदि विनाशकारी चीजें लेने लगे तो तुरन्त ही, बड़ी सुगमता से, हम गलत एवं विध्वंसक चीजों को स्वीकार करने लगते हैं।

"मैं सोचती हूँ यह भी एक प्रकार से नस्ल का ही दोष हैं क्योंकि कुछ लोग किसी भी मुर्खतापूर्ण या विध्वंसक चीज को बिल्कुल स्वीकार नहीं करते। पर कुछ लोगों का झुकाव घिनौनी तथा निश्चित रूप से विनाशकारी चीजों को स्वीकार करने में होता है। उदाहरणार्थ एक अस्थिर दृष्टि व्यक्ति अन्य लोगों को इस प्रकार प्रभावित कर सकता है कि वे भी उसके समान बन जाएं। हर तरह से भूतों के प्रवेश के लिए आंखे अच्छा द्वार हैं। आप जब इनका पुनः प्रक्षेपण करने लगते हैं तो यही भूत दूसरे व्यक्ति में प्रवेश कर सकते हैं तथा उस व्यक्ति के हँसा चक्र में वैसा ही खालीपन तथा दुर्बलता पैदा कर सकते हैं। इसी कारण दृष्टि अति स्वच्छ तथा निर्मल होनी चाहिए।"

विवेक हीनता अन्य इन्द्रियों को भी प्रभावित करती हैं। लोगों को गलत चीजें सुनने की आदत पड़ जाती है और वे उन चीजों को पसंद करने लगते हैं। सड़े हुए पनीर, तम्बाकू, मानव रचित मदिरा की गंध वाली खुशबू की आदत लोगों को हो जाती है।। ये गंध नाक की कोशिकाओं के लिए हानिकारक हैं और कुछ समय में व्यक्ति अति आनन्ददायी घ्राण शक्ति को खो बैठता है। यदि किसी चक्र की सूक्षमता समाप्त हो जाए तो हमारा उत्थान समाप्त हो जाता है और हम पशुवत हो जाते हैं।

गले के साथ भी ऐसा ही है। अभद्र भाषा बोलने लोगों को गाली देने, उन पर क्रोध दर्शाने या रोब जमाने के लिए तथा मदिरा या धूम्रपान के लिए यदि गले का उपयोग किया जाए तो गला दुर्बल हो जाता है, आपकी वाणी का माधुर्य समाप्त हो जाता है। बिना विवेक के खायी वस्तुओं पर मुंह तथा दांतों के दुर्गन्ध को भी प्रक्रिया होती है। विज्ञापन तथा विपणन तकनीक के आधार पर यदि हम वस्तुएं खरीदते हैं तो इसका अर्थ यह है कि अभी तक हमारे विवेक तथा व्यक्तित्व का विकास नहीं हुआ

हँसा चक्र जागृत होने पर विवेक विकसित होता है। संस्कृत का एक सुन्दर श्लोक है कि हँस और बक (बगुला) दोनों श्वेत पक्षी हैं। तो उनमें क्या अन्तर है? यदि दूध में पानी मिला हो तो हँस उसमें से दूध पी जाएगा और पानी को छोड़ देगा परन्तु बगुले को दूध तथा पानी अलग करने का विवेक नहीं है।

बिना विवेक के हम यंत्रमानव (रोबों) की तरह बन जाते हैं क्योंकि हमारा कोई व्यक्तित्व ही नहीं रह जाता। "कोई भी व्यक्ति हम पर अपने विचार लाद देगा और जो भू कुछ हमारे विवेक के विषय में लोग कहेंगे हम उसे सुनेगें"। असंख्य लोगों के कुगुरुओं के पास जाने, समलैंगिकता अपनाने तथा एड्स से पीड़ित होने का यही कारण है। "समझ में नहीं आता कि लोग क्यों इन सब बातों में फंस कर अपना जीवन नष्ट कर रहे हैं। स्वविनाश करने के लिए व्यक्ति धन खर्च करता है। कितना

अस्वभाविक है।" पशु भी खतरे को पहचान कर भाग खड़े होते हैं क्योंकि उन्हें अपने जीवन की रक्षा करनी होती है। पर मनुष्य में तो इस सामान्य बुद्धि का भी अभाव है, लोग कहेंगे–बुराई क्या है? इसमें क्या बुराई है? उसमें क्या बुराई हैं? अभिप्राय यह कि हँस की आनुवांशिकी ही लुप्त है। हँसा चक्र पर कोई देवता नहीं पर श्री गणेश द्वारा संचालित श्री बुद्ध, महावीर, ईसा और श्री कृष्ण की देख–रेख वाले बहुत से अंगों की निराकार शक्ति है।

"अतः यह आनुवंशिकी (रक्त में यह गुण) श्री गणेश की देन है क्योंकि वे ही विवेक के स्रोत हैं।

"लोग यदि एक बार अपने मूलाधार को खराब कर दें तो विवेक और मूल तत्व समाप्त हो जाते हैं। यही कारण है कि दुष्चरित्र जीवन हमारे लिए अति घातक है क्योंकि अपवित्र लोगों का विवेक समाप्त हो जाता है।----- पर यदि अचानक आपकी जागृति हो ज़ाए तो आप सहजयोगियों की उच्च जाति से सम्बन्धित हो जाते हैं। मैने लोगों को रातो–रात नशे छोड़ते देखा है, दुष्चरित्र लोग अत्यंत चरित्रवान बन जाते हैं क्योंकि अचानक उनका यह चक्र जागृत हो उठता है। रोज मर्रा तथा सामुहिक जीवन में आत्मा के प्रकाश की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति इसी चक्र द्वारा होती है।"

" सहजयोग में कई समस्याएं भी हैं। सहजयोग में जब नए लोग आते हैं तो वे अन्य लोगों के दोष ढूंढने लगते हैं। वे यह नहीं देखते कि यहां उनका लक्ष्य क्या है। वे यहां दूसरों के दोष ढूंढने नहीं आए, यहां वे अपने दोषों को दूर करने के लिए आए हैं। कुछ लोग यहां धन कमाने की सोचते हैं। कुछ अन्य दूसरे लोगों को, किसी न किसी बात पर आलोचना करने लगते हैं जबकि यह उनका कार्य नहीं।

" वे भूल जाते हैं क्योंकि वे नए–नए सहजयोग में आए हैं और उनकी आनुवांशिकी में विवेक स्थापित नहीं हुआ है। वे नेता में ही दोष ढूंढने लगते हैं । कभी–कभी नेता भी सोच सकता है ' ओह, मैं नेता हूँ, मैं अति कठोर तथा अनुशासनात्मक होकर लोगों का संचालन कर सकता हूँ। वे यहां प्रेम करना, करुणमय तथा सहनशील बनना सीखने आए हैं। अगुआपन तथा आज्ञापालन विवेकाधीन है। यदि कोई व्यक्ति आपको कुछ कहे और आप स्वहित के लिए उसकी आज्ञा पालन कर लें तो सूक्ष्म रूप से आप समझ जाएंगे कि यह आपके हित के लिए है। यदि अगुआ आपकी कोई कमी बताए तो दुःखी होने के स्थान पर उस दोष को सुधारने का प्रयत्न कीजिए।"

"हमारे पुनर्जन्म के बाद भी हम अपने पिछले जीवन के कुछ संस्कार उसी प्रकार अपने साथ लिए फिरते हैं जैसे अंडे में से निकले हुए पक्षी पर अंडे का कुछ न कुछ तत्व चिपका हुआ हो। आप को आत्म साक्षात्कार मिल चुका है। अतः पहला विवेक यह होना चाहिए कि मैं आत्मा–निर्मल आत्मा की वह अवस्था किस प्रकार प्राप्त करुं? परन्तु विवेक के अभाव में लोग भटक जाते हैं। आत्म साक्षात्कार के बाद मैने देखा है , लोगों की दृष्टि स्थिर हो जाती है अब वे अपनी दृष्टि को अधिक नहीं घुमाते। उनकी दृष्टि निर्मल हो जाती है।

आनन्द लेने की सामर्थ्य आपमें आत्म साक्षात्कार के बाद ही आती है और जो मुख्य चीज आपके साथ घटित होती है वह है विवेक का आ जाना। तब हंस की तरह आप हर चीज का साथ ले लेते हैं। आपका दृष्टिकोण बिल्कुल भिन्न हो जाता है। जीवन तो अब भी बिल्कुल वैसा ही है। कुछ भी परिवर्तित नहीं हुआ– वही घर, वही परिवार, वही शहर, वही वातावरण, फिर भी आप आनन्द लेने लगते हैं क्योंकि आपके हँसा चक्र की संवेदन शीलता अब केवल दैवी विवेक के लिए है। यह आप तुरन्त जान जाते हैं और तब आपका काँटों से कोई वास्ता नहीं रह जाता। आप केवल पुष्प एकत्र करना चाहते हैं, आपको इसका ज्ञान है तथा आप आनन्द में हैं।

अतः हँसा चक्र से चमकने वाला आपकी आत्मा का प्रकाश आपको विवेक प्रदान करता है। विवेक का यह अर्थ नहीं कि आपको लोगों से वाद विवाद करना या झगड़ना आ जाए। इसका अर्थ है कि हर चीज का आनन्द लेने के लिए आप कैसे उसकी अच्छाई खोजें तथा विनाशकारी गुणों को त्याग कर रचनात्मकता को अपनाएं। समझदार व्यक्ति अपनी रक्षा करता है। वह अपने जीवन का सम्मान करता है क्यों कि वह जानता है कि अब वह परमात्मा का यंत्र बन चुका है।

तो आपमें स्वतः ही अनुभव द्वारा बुद्धि आ जाती है। तब आप जान जाते हैं कि ठीक रास्ता कौन सा है। एक बार जब यह बुद्धि पारदर्शी हो जाती है और आप इसमें से हर चीज को स्पष्ट देखने लगते हैं तो आपका मस्तिष्क भी पूर्णतया स्वच्छ हो जाता है। तब यदि कोई आपसे बुद्धिमत्ता की कोई बात कहे तो आप इसका बुरा नहीं मानते।

इस परिवर्तन के कारण , आप द्वारा पहले से पढ़ी या सुनी हुई कविता का संगीत अब आपको इतना आनन्द देता है जैसे आप सातवे स्वर्ग में हों। आखों तथा कानों के सूक्ष्म अंग है। वे अंग अब पूरे वातावरण में ऐसी अनुक्रिया प्रसारित करने लगते हैं कि आप केवल सुन्दर को ही ग्रहण करते हैं। एक बार जब आप ऐसा करना सीख जाते हैं तब आप कहते हैं " हम आनन्द सागर में तैर रहे हैं।" सागर तो वही है, परन्तु अब आप उसके अन्दर की अमृत की सुन्दर बूंदों को प्राप्त कर लेते हैं और अन्य लोग डूबने से डरते रहते हैं। वही संसार हैं। इसी कारण लोग

कहते हैं कि यह माया है, पर विवेकबुद्धि के प्रकाश में माया नहीं रह जाती।

आप सुरक्षा तथा विवेक से सुसज्जित हैं, और आप जानते हैं कि आप क्या कर रहे हैं। मैने देखा है कि किस प्रकार से सहजयोगी हर चीज का आनन्द लेते हैं, चाहे कोई व्यक्ति हाल में खड़ा होकर चिल्ला रहा हो या कुछ कह रहा हो। मैने देखा है कि किस प्रकार सारे सहजयोगी हँसने लगते हैं। वह बेचारा गरीब यहां की हर चीज की निंदा करने के लिए जोर लगा रहा है और सहजयोगी उस पर हँस रहे हैं। उसकी मूर्खता का वे आनन्द ले रहे हैं।

अतः हँसा चक्र के कारण जीवन का पूर्ण दृष्टिकोण इतना परिवर्तित हो गया है और आपको पता भी नहीं कि आपमें स्वतः ही विवेक विकसित हो गया है। तब आप इसे दृढ़ करने लगते हैं तथा इसे अपना पक्का विश्वास बनाने लगते हैं क्योंकि बार-बार आप अनुभव करते हैं कि जिस बात पर आपने भरोसा किया वही पूर्ण हो गई। अचानक लोग आपसे मिल जाते हैं और आपकी सहायता हो जाती है। बहुत सी चीजें घटित होती हैं।

लोगों का संचालन करने, उनसे बातचीत करने तथा अपने कार्य का संचालन करने का विवेक आपमें कार्यान्वित हो जाता है। और यदि यह कार्य नहीं भी करता तो भी आपको बुरा नहीं लगता। आप सोचते हैं क्या करुं? दूसरा व्यक्ति तो सहजयोगी नहीं है। हमने प्रयत्न किया। क्या हो सकता है? सर्व व्यापक शक्ति अति चुस्त है तथा हमें देख रही है। सारे महान संत कार्य को कर रहे हैं। कभी आपको ऐसा लगता है कि देवदूत आपके साथ हैं किस प्रकार वे पथ प्रदर्शन कर रहे हैं तथा किस प्रकार कार्य हो रहा है। तब आप यह सब कुछ देखने, समझने तथा विश्वास करने लगते हैं। और तब विवेक बुद्धि स्थापित हो जाती है। इस अवस्था के आने से पूर्व, सम्भव है कि, सहजयोगी सहजयोग छोड़ दे और बाहर चला गया।

मैं ऐसे लोगों को जानती हूँ जो छोटी-छोटी बात पर सहजयोग से बाहर चले जाते हैं। बाह्य सतह (परिधि) पर हर तरह के लोग हैं। बाह्य सतह पर यदि आप खड़े हैं और कोई आप से कुछ कह दे तो आप गए। क्योंकि अभी तक आपने विवेक की अवस्था प्राप्त नहीं की है।" मैं ठीक स्थान पर हूँ। यदि दूसरा व्यक्ति गलत है तो वह जाए सहज से। मैं क्यों बाहर जाऊँ? हँसा चक्र के कार्यान्वित होने पर ही उत्थान सम्भव है।

मैने लोगों को समर्पित होते देखा है। आप जानते हैं विश्वभर में फैली यह बहुत बड़ी संस्था है। मेरा कोई सचिव नहीं है---- पर हर सहजयोगी मेरा सचिव है, हर व्यक्ति स्वयं ही सहजयोग के लिए कार्य कर रहा है। सहजयोग के साथ उनका तदातम्य स्थापित हो चुका है, इसके वे जिम्मेवार हैं। वे मानव की तथा सहजयोग की सहायता के लिये कार्य कर रहे हैं।

"अतः आपमें गलत चीजों से जो सम्बन्ध विकसित होते हैं वे सब सहजयोग में आ कर छूट जाते हैं। तब आप स्वयं को सुन्दर चीजों से जुड़ा हुआ पाते हैं क्योंकि सुदरता की सुगन्ध और आनन्द आप लेने लगते हैं और आपका हृदय खुलने लगता है। जब तक आपका हँसा चक्र अहँ तथा बंधनों से ग्रस्त है तब तक यह आनन्द प्राप्त करना सम्भव नहीं। इस विश्वास के साथ कि इन बन्धनों को त्यागने में ही हमारा हित है, यदि हम इनसे छुटकारा पा लें तो आज्ञा चक्र खुल जाता है।"

"हँसा चक्र को स्वच्छ रखना अति महत्वपूर्ण है। शारीरिक स्तर पर भी हँसा चक्र को साफ रखने के लिए मैने और भी बहुत सी विधियां बताई हैं जिनका उपयोग आपको करना चाहिए। मानसिक स्तर पर मस्तिष्क को स्थिर करने के लिए भी मैने बताया कि आप को क्या करना चाहिए। हर चीज की सुन्दरता को देखिए उसके दोषों को नहीं, उसकी उपयोगिता को न देखिए उसकी सुन्दरता को देखिए शनैः-शनैः आप पाएंगे कि आपकी दृष्टि स्वच्छ हो गई है। हँसा चक्र का महानतम कार्य -मैं नहीं जानती कि आपको इसका ज्ञान है या नहीं- यह है कि वह आपके पूर्व कर्म-फल को समाप्त करता है। भूतकाल में किए गए हमारे पाप हो गए, मानों भूतकाल से आपका नाता ही टूट गया हो। एक बार हँसा चक्र के स्थापित हो जाने पर आप ही के अपने सम्बन्धियों, पुरखों, परिवार, देश तथा विश्व के भी, अपराध तथा पाप आपको छू नहीं पाते। आप उनसे अलग हट जाते हैं"

" और इस कृतयुग में जबकि ब्रह्म चैतन्य लोगों को पूर्व किए अपराधों के लिए, सामुहिक तौर पर एक एक देश को अनावृत (बेपर्दा) करना चाह रहा है, वह भी आपको छू तक न सकेगा, क्योंकि इस चक्र का प्रकाश अति शक्तिशाली है, और आपको पूर्व-कृत अपराध-फल के भय से मुक्त कर दिया जाएगा। कीचड़ में जन्मे कमल की तरह आप सुन्दर होंगे और पूरे विश्व में सुन्दर सुगन्ध बिखरेंगे।

परमात्मा आपको आशीष दे।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

श्री विष्णुमाया पूजा (सारांश)

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन
शॉनी, पैन्सिलवानिया, यू. एस. ए. 19-9-1992

आज हमने विष्णुमाया पूजा करने का निर्णय किया है। यह विष्णुमाया हैं कौन? अमेरिका श्री कृष्ण का देश है और श्री कृष्ण ही कुबेर हैं और यम भी हैं। क्योंकि वे कुबेर हैं इसलिए यहां लोग सबसे अधिक धनवान हैं। अब याद रखिए कि आपको संतुलन प्राप्त करना है। श्री कृष्ण की महालक्ष्मी शक्तियों में भी साधना महत्वपूर्ण है। अमेरिका में महालक्ष्मी तत्व आरम्भ हुआ पर लोगों में इतना विवेक न था कि परमात्मा की खोज के लिए वे किधर जाएं। बहुत से तो झूठे विज्ञापनों तथा वायदों से ही रीझ गए।

अमेरिकन लोगों को चेतावनी देने के लिए श्री माताजी उस समय आई जब साधना के परिणाम नजर ही आने लगे थे। वे जानती थी कि विश्वभर से कुगुरु अमेरिका में आएंगे क्योंकि यहां उनके लिए बाजार था। पर किसी ने उनकी बात न सुनी। इन कुगुरुओं ने अमेरिकन लोगों की दुर्बलता खोज निकाली। उनके अहँ को बढ़ावा दो और उन्हें कहो कि सुन्दर प्रतीत होने वाली कोई अत्यंत उथली सी चीज ही अति महत्वपूर्ण है। उदाहरणार्थ कुछ अमेरिकन पृथ्वी से तीन फुट ऊपर उड़ने के ही पीछे लग गए क्योंकि उन्हें यह विचार एक दम नया तथा भिन्न प्रतीत हुआ। जो लोग अब भी धनाभिमुख थे उनमें यह समझने के लिए महालक्ष्मी तत्व का अभाव था कि सत्य की खोज के लिए धन नहीं देना पड़ता, और न ही कुगुरुओं की आवश्यकता है। पर इस वर्ष पहली बार मुझे लगता है कि सब ठीक हो गया है।

विशुद्धि चक्र में बायीं विशुद्धि अत्यंत महत्व पूर्ण है। इसके पकड़े हुए होने पर आपको एन्जाइना (हृदयशूल) स्पॉंडीलाइटिस और सुस्त अंग रोग हो सकते हैं। पश्चिमी देशों में बायी विशुद्धि की पकड़ एक प्रकार से फैशन सा है, सम्भवतः ईसाई धर्म में अपने दोष स्वीकार करने तथा अपने को दोषी कहने की प्रथा के कारण ऐसा हो। आप को कहना पड़ता है कि आप जन्मजात अपराधी हैं। क्योंकि आपको अपराधी घोषित कर दिया जाता है आप भी दोषभाव से ग्रस्त हो जाते हैं और आपकी बांयी विशुद्ध पकड़ी जाती है।

अमेरिका में आज भी बहुत बड़ी कमी है कि वहां के लोग आत्म विश्वास की कमी के कारण छोटी-छोटी चीजों के लिए अपने को अत्यंत अपराधी मानते हैं। यद्यपि वे बहुत घमंडी हैं और बहुत दिखावा करते हैं फिर भी वे सोचते हैं कि वे परम्परा विहीन एक अविकसित राष्ट्र हैं। उनमें अजीब विचार है कि अंग्रेज तथा फ्रैंच बहुत परिष्कृत हैं तथा भारतीय असभ्य हैं। इस धारणा के कारण वे अपनी कमी को पूरा करने का प्रयत्न करते हैं और परिणामतः उनकी बायीं विशुद्धि बुरी तरह पकड़ी जाती है।

सर्व प्रथम जब आप अपनी गलतियों का सामना नहीं करना चाहते तो यह चक्र पकड़ जाता है। मैंने गलतियां कीं, ठीक है पर अब मैं उन्हें नहीं दोहराऊंगा" बस सामना कीजिए। पर वे सामना करना ही नहीं चाहते। वे स्वयं को दोषी मानेगें- दोष भाव को बायीं विशुद्धि पर डाल देंगे। दोष भाव के काले बादल वे एकत्र कर लेंगे। तब मेघ-गर्जन, काले बादलों के मामूली घर्षण से फूट पड़ने वाला विद्युत प्रवाह तथा वर्षा की उत्प्रेरक विष्णुमाया ऐसे लोगों पर प्रकोप करती हैं। अचानक उन्हें सदमा लगता है। वे अति संवेदनशील होकर व्यग्र हो उठते हैं। यह अधीरता उन्हें सोचने पर विवश कर देती हैं कि " हम अधीर क्यों हैं? क्या समस्या है? उनके अपराध भाव का अनावरण विष्णुमाया शक्ति द्वारा होता है।"

विष्णुमाया का आरंभ अति रोचक है। विष्णु माया श्री कृष्ण की बहन थी जो श्री कृष्ण के बाद उत्पन्न हुई। वास्तव में वे नन्द और यशोदा के घर जन्मी। नन्द-यशोदा ने श्री कृष्ण के बदले में उसे दे दिया। कंस को बताया गया कि वह लड़की उसकी बहन का आठवां बालक है। लड़की होनेके कारण कंस ने उसे आकाश में फेंक दिया "वहां से उसने उद्घोषणा की कि श्री कृष्ण अवतरित हो चुके हैं और वही तुम्हारा वध करेंगे। विष्णुमाया अवतरणों की तथा अच्छी घटनाओं की घोषणा करने वाली शक्ति है। अध्यात्मिक दृष्टि से अपवित्र चीजों को भी जला सकती हैं।

महाभारत के समय वे द्रौपदी के रूप में अवतरित हुई। जब दुर्योधन उसे निर्वस्त्र करवाना चाहता था तो उसने श्री कृष्ण को पुकारा तथा वे बिना विलम्ब के द्वारिका से अपने शास्त्रो सहित आ गए। द्रोपदी का चीर तब तक बढ़ाया जब तक दुःशासन थक कर पृथ्वी पर न गिर गया।

अतः विष्णु माया पंच तत्वों में रहने वाली पवित्रता हैं। यही पवित्रता द्रोपदी के विवाह के समय पांचों पाण्डवों को दिखाई गई थी। उनकी कौमार्यता (पवित्रता) की शक्ति का उपयोग धर्म-नाश करने के इच्छुक कौरवों का भण्डाफोड़ करने के लिए किया गया। द्रोपदी ने पाण्डवों से आग्रह किया कि धर्म की रक्षा के लिए तुम्हें युद्ध करना ही होगा, परिणाम चाहे जो भी हो।

भाई के रूप में श्री कृष्ण ने सदा उनकी सहायता की। अतः भारत में भाई–बहन सम्बन्ध अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। सहजयोगियों में भी ऐसा ही होना चाहिए। हमारे यहां रक्षा बंधन तथा भाई–भेज होता है जिसमें दिवाली के दिन हम भाई को राखी बांधते हैं।" यह राखी विष्णु माया की शक्ति है जो भाई की रक्षा करती हैं"। सम आयु, एक सी सूझबूझ, सुरक्षा, प्रेम और पवित्रता के कारण भाई–बहन सम्बन्ध अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इस सम्बन्ध को विष्णुमाया चलाती हैं।

जब हम इसकी गहनता में जाते हैं तो स्वयं ही विशुद्धि की समस्याएं देख सकते हैं। पश्चिमी देशों के लोग स्वयं को दोषी मानते हैं तथा गलतियों से छुटकारा पाने का प्रयत्न करते हैं। छोटी–छोटी बातों पर दोष भाव– क्योंकि पश्चात्य समाज के कायदे कानून ही इतने कठोर हैं। दोष भाव इतना है कि कोई भी स्वयं को सुधार नहीं सकता। बस सदा दोष भाव से ग्रस्त रहता है। जीवन की सूक्षमताएं लुप्त हैं। सहजयोग में दोष भाव होने का अर्थ है कि आपकी पूरी बाई तरफ पकड़ी हुई है। आप ठीक प्रकार से चैतन्य लहरियों का अनुभव भी नहीं कर सकते क्योंकि आपकी ग्रीवा नाड़ी पर तो आपका दोष बैठा है। दोषभाव ने इसे जकड़ रखा है, आप बाई ओर को महसूस ही नहीं कर सकते। कोई भयानक बीमारी होने तक आपकी बायी तरफ की पकड़ बनी रहती है।

विष्णुमाया की सूक्ष्म बात यह है कि वह सच्चाई जानती है। वह चमकती है, और आप सब कुछ देख सकते हैं। इसी प्रकार जब विष्णुमाया आप पर कार्य करने लगती है तो वह सत्य को अनावृत करती है। परन्तु यदि आपकी बाई विशुद्धि की पकड़ बनी रहती है तो विष्णुमाया चली जाती है। विष्मुमाया आपको सुधारने, किसी तरह आपकी सहायता करने या आपको अनावृत करने के लिए नहीं है। तब आप कुछ भी महसूस नहीं करते, आपकी बाई ओर जड़वत हो जाती है। बायीं ओर से ही इधर के रोगों का पता चलता है। यही कारण है कि भारत की अपेक्षा पश्चिमी देशों में बाई ओर के रोगों का बाहुल्य है।

अतः दोषी महसूस करना अनुचित हैं, यह केवल मनगढ़न्त बात है। स्वयं को दोषी मानने का क्या लाभ हैं ? ऐसा करना व्यर्थ हैं। आपने यदि कोई अपराध किया भी है तो इसका सामना कीजिए और निश्चय कीजिए कि मैं इसे दुबारा नहीं करुंगा। अपराध को स्वीकार मात्र करते रहने से तो आप यह अपराध बार–बार करेंगे और फिर आपको इसकी आदत हो जाएगी। बार बार करेंगे किसी झिझक के लोग अपराध करते हैं। तब आप सोचते हैं " बुराई क्या है"? इस अहंकारमय आचरण के पीछे कोई अत्यन्त दोषी छिपा होता है।

अमेरिकन लोग संसार की घटनाओं के बारे अति सामुहिक होते हैं, परन्तु अपराध भाव उन्हें वास्तविकता के प्रति संवेदनशील तथा उन्मुक्त बना देता है। उदाहरणतया वे एक तानाशाह देश को उत्साहित करेंगे। रोजमर्रा के जीवन में भी कोई आकर यह नहीं कहेगा कि हम यह गलत कार्य कर रहे हैं, ऐसा करना हमें छोड़ देना चाहिए।

इस दृष्टिकोण को साथ कि 'यह तो मुझ पर ज्यादती है" उन्हें कुछ और करना पड़ता है। इसी कारण उन्होंने इतनी मशीनें तथा विज्ञान विकसित कर लिया। परन्तु विज्ञान हर बात का समाधान नहीं है। यह आपको पूर्णत्व तथा वास्तविकता नहीं प्रदान कर सकती। "तो यह विष्णुमाया अपनी शक्ति दिखाती है। वह ऐसे बहुत से कार्य करती है जिससे लोग डर जाएं। किसी भी तत्व में वह प्रवेश कर जाती है। यदि वह जल तत्व में प्रवेश कर जाएं तो प्रचण्ड तूफान की रचना कर देती है। वे कुछ भी कर सकती है। किसी तत्व में जब वे प्रवेश करती हैं तो उत्प्रेरक बन जाती हैं।

मैं प्रसन्न हूं कि आज का कार्यक्रम विष्णुमाया के लिए किया गया। आप सहजयोगियों में इस शक्ति को संचालित करने की योग्यता होनी चाहिए। उनकी पूजा करने की योग्यता भी आपमें होनी चाहिए ताकि वे आपको देख सकें, आपकी देखभाल कर सकें तथा आपके जीवन का संचालन करें।

अमेरिका में सबसे कठिन कार्य लोगों को यह समझाना है कि धन ही सभी कुछ नहीं। लोगों को धन की इतनी लत (नशा) लगती है कि जीवन के मूल्यों का पतन होने लगता है। धन प्राप्त करने के लिए लोग सब कुछ करने लगते हैं। मानव का मूलभूत आधार "पवित्रता " ही उनमें नहीं है। जब आप विष्णुमाया की पवित्रता का अपमान करते हैं तो माया अपना खेल दिखाती है और आपको एड्स जैसे रोग हो जाते हैं। और भी बहुत से रोग हो जाते हैं जो असाध्य हैं तथा जिन्हें गुप्त रोग कहते हैं।

वे कुमारी (निर्मल) हैं तथा कौमार्य का सम्मान करती हैं। कौमार्य केवल स्त्रियों के लिए ही नहीं होता। यदि पुरुष भी अपने पातिव्रत्य और पवित्रता का सम्मान नहीं करते तो उन पर भी कई प्रकार से विष्णुमाया का आक्रमण होता है। यह सुनकर मुझे हैरानी नहीं होती कि लॉस–एन्जलिस सदा खतरे में हैं– इसका कारण आपके बनाए चलचित्र तथा ऐसी अन्य चीजें हैं। पर अब लासएन्जलिस में सहजयोग स्थापित हो जाने के कारण व्याधियों को रोका जा सकेगा। पर अभी भी बहुत भयानक है क्योंकि विष्णुमाया अत्यंत शक्तिशाली हैं और वे माया की रचना करती हैं और माया रूप में लीला करती हैं। वे माया को तोड़ती भी है तथा किसी भी चीज को जला सकती है।

विष्णुमाया सुधारक हैं। जब हम अपने अपराधों के दोष स्वीकृति के नाम पर छुपाते हैं, इन अपराधों को कोई अन्य

रंग या या नाम देने का प्रयत्न करते हैं तो यह शक्ति उन अपराधों का भण्डाभोड़ व्यक्तिगत, सामूहिक राष्ट्रीय या अन्तराष्ट्रीय स्तर पर करती है, क्योंकि इनमें किसी भी चीज के अन्दर प्रवेश कर जाने की शक्ति है। सारे प्राकृतिक विध्वंस विष्णुमाया ही लाती हैं। पर लोगों को चाहिए कि इन प्रकोपों का कारण अपने अपराधों को समझें जिन्हें करने के बाद वे अपनी बांयी विशुद्धि में छुपाए रहते हैं, उनका सामना नहीं करते।

एक बार बायीं विशुद्धि यदि जड़ हो जाए तो हँसा चक्र का विवेक भी आपमें समाप्त हो जाता है। तब आपको समझ ही नहीं आता कि विध्वंसक क्या है तथा रचनात्मक क्या है। यदि आपकी बांयी विशुद्धि खराब है आप विध्वंसक चीजों को स्वीकारने लगते हैं। इसी के कारण हिंसा, धोखाधड़ी और भृष्टता प्रचलित हुई। इस भयानक अवस्था से बचने का एकमात्र उपाय सहजयोग को भली भांति अपनाना है। आत्म विश्वास द्वारा आप बायीं विशुद्धि की खराबी से छुटकारा पा सकते हैं। पर समस्या यह है कि मैं जब आपको कुछ बताती हूं तो भी आप में दोष भाव आ जाता है। जो भी कुछ आपने किया व पूर्णतया समाप्त हो गया है और उसके लिए आपको क्षमा कर दिया गया है। नहीं तो विष्णुमाया आपको दण्डित करतीं।

दायीं ओर के (राजसिक) लोग, जो क्रोधित हो जाते हैं, दूसरों पर प्रभुता जमाते हैं तथा अन्य लोगों को वश में करते हैं, उनमें अपने दोषों को सुधारने के स्थान पर बायीं विशुद्धि में रखे रहने की विशेष शक्ति होती है। इसी कारण मैं सदा कहती हूं कि बांयी विशुद्धि की समस्या अहँ का ही उपफल है। दोषभाव ग्रस्त होकर आप केवल अपनी ही हानि नहीं करते दूसरों को भी नुकसान पहुंचाते हैं।

दो अन्य चीजें भी विष्णुमाया को परेशान करती हैं। इनमें से एक है धूम्रपान। दूसरी चीज जिसे लोग नहीं जानते, वह है मन्त्र। श्री विष्णुमाया ही मंत्रों को शक्ति देती है। यदि आप परमात्मा की शक्ति से संबंध बनाए बिना ही मन्त्रोच्चारण किए जा रहे हैं तो आपको उस शक्ति को जोड़ने वाले तार जल सकते हैं तथा आपको गले की समस्याएं हो सकती हैं क्योंकि कृष्ण तथा विष्णु में कोई अन्तर नहीं। आपको विराट की समस्या भी हो सकती है।

कुछ लोग उदारता दर्शा कर अपने अपराधों पर पर्दा डालना चाहते हैं। इस प्रकार का आचरण अत्यंत छलमय है। यह विष्णुमाया पर नहीं चलता। वह आपको अच्छी तरह जानती हैं और यदि आपने उससे चालाकी करने का प्रयत्न किया तो वह अपनी शक्तियां दिखाएंगी।

हमारी बायीं ओर की सारी समस्याएं विष्णुमाया के कुपित होने के कारण होती है। वह आपको दण्डित करती है, आपके अपराधों का भण्डाफोड़ करती हैं, आपको ज्योति प्रदान करती हैं तथा आपके दोष भी दूर करती हैं। हमें कृतज्ञ होना चाहिए कि इतनी शक्तियों से परिपूर्ण विष्णु–माया की यह विशेष पूजा हम आज कर रहे हैं। मेरे विचार से पश्चिमी देशों, विशेषकर अमेरिका पर दोषभाव ग्रस्त होने का अभिशाप है। तो आज आप सब को अपने हृदय में वचन देना होगा कि "श्री माता जी मैं पूर्णतया निर्दोष हूं।" ऐसा यदि आप कहेंगे तो वह अति प्रसन्न होंगी। एक बार जब आप दोषी महसूस करना बंद कर देंगे तो आप गलतियां करेंगे ही नहीं। क्योंकि अब स्वयं में दोष भाव तो रख ही नहीं सकते इसलिए गलती करने का क्या अभिप्राय है अपराध यदि आप करेंगे तो वे आपके सिर पर चढ़ेंगे। अब आप इसे अपनी बायीं विशुद्धि पर तो डाल ही नहीं सकते। परन्तु यदि बांयी विशुद्धि में अपराधों को रखने के लिए स्थान हो तो आप अपराध करते ही चले जाएंगे।

अमेरिका यात्रा से मैं प्रसन्न हूँ। मैं वास्तव में प्रसन्न हूँ क्योंकि अधिकतर स्थानों पर अच्छा कार्य हुआ।

पश्चिमी लोगों के लिए सबसे बड़ा मंत्र प्रकृति को यह कहना है कि " मैं बिल्कुल निर्दोष हूँ। इससे आपकी पर्यावरण समस्या का भी समाधान हो जाएगा क्योंकि आप पर्यावरण दूषित करने वाला कोई भी कार्य न करेंगे। बहादुरी से सामना करने से तथा अपना सुधार करने से हमारी बहुत सी समस्याएं हल हो जाएंगी। स्वयं को अपराधी ठहराने, अपमानित करने तथा घटिया मानने की कोई आवश्यकता नहीं। अपने को स्वयं से पृथक करो। आप शीशे में बात कर सकते हैं, नदी पर जाकर बात कर सकते हैं या समुद्र पर जाकर कह सकते हैं" देखो मैने यह अपराध किया है पर अब मैं ऐसा नहीं करुंगा।" सभी तत्वों से आप वायदा कर सकते हैं क्योंकि विष्णुमाया पांचों तत्वों में है। उसे आपका संदेश मिल जाएगा तथा वह किसी भी तत्व में न घुसेंगी और न आपको परेशान करेंगी।

जाकर आपको समुद्र को बताना होगा कि "अपने किए अपराधों के लिए अमेरिका दोषी नहीं है"। यदि सहजयोगी ऐसा कहेंगे तो विष्मुमाया विश्वास कर लेंगी क्योंकि सहजयोगियों की नस्ल बदल चुकी है। कृत युग के इस काल में हमें अपने अपराधो का दण्ड भुगतान पडता है। स्वयं को अपराधी मानने से काम न चलेगा। "अतः व्यक्ति को साक्षात्कार लेना चाहिए, और अपनी आनुवांशिकी (नस्ल) पूर्णतया बदल लेनी चाहिए। तब आप जाकर प्रकृति से कह सकते हैं " हम निर्दोष हैं हमें साक्षात्कार प्राप्त हो गया है और यह कार्य करेगा। मुझे विश्वास है कि आप सहजयोगी इस देश की बहुत सी विपदाओं को दूर कर सकते हैं।

परमात्मा आप पर कृपा करें।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

क्रिसमस पूजा (सारांश)

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन
गणपतिपुले 24-12-1992

जोसज़ क्राइस्ट आदिशक्ति पुत्र श्री गणेश के अवतरण थे। श्री राधा तथा महालक्ष्मी की अवतरण मां मैरी ने ईसा के इस महान अवतरण का सृजन किया।

ईसा ने कहा है कि " आपकी आँखे अपवित्र नहीं होनी चाहिएं"। इतना सूक्ष्म! कि आँखों में भी अपवित्रता, वासना तथा लालच नहीं होना चाहिए। पश्चिम में लोग इस बात को समझ न पाए क्योंकि पॉल और पीटर के नेतृत्व में पूरा धर्म ही विकृत हो गया। ईसा के प्रति उन्होंने यह घोर अपराध किया है। सबसे पहली बात जो उन्होंने कही वह है कि आप परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करें। आपका पुनर्जन्म लेना आवश्यक है। ईसाई लोग मानसिक स्तर पर कहेंगे " आप द्विज हो गए।" पश्चिमी लोगों का मानसिक दृष्टिकोण ही ईसा की हत्या के लिए उत्तरदायी है। यह दूसरा क्रूसारोपण है। मानसिक स्तर पर आप अध्यात्मिकता को नहीं समझ सकते। सहजयोग में मस्तिष्क - विश्वास कहां हैं? निर्विचार समाधि में मस्तिष्क कहां होता है। कुछ लोग मंच पर आकर भाषण देना चाहते हैं। यह एक प्रकार का पागलपन है। यह मात्र मस्तिष्क है। हृदय खुलना चाहिए।

हमें ईसा को ठीक प्रकार से समझना चाहिए। वे अनन्त बालक हैं। वे साक्षात अबोधिता हैं। वे ही निर्मलता के स्रोत तथा सभी चक्रों पर आशीष प्रदायक हैं। व्यक्ति को समझना चाहिए कि किस प्रकार ईसा ने इतने चमत्कार दिखाए। सर्वप्रथम उनका जन्म दोष रहित था। पश्चिमी लोगों को विश्वास नहीं होता कि वे इतने निर्मल हो सकते थे। एक अपराधी विश्वास नहीं कर सकता कि अन्य लोग निरअपराध भी हो सकते हैं। यदि आप दूसरे लोगों को आकर्षित तथा प्रभावित करने के चक्कर में लगे हुए हैं तो इसकी कोई आवश्यकता नहीं।

आपके अन्दर जब प्रकाश आ जाएगा तो लोग जान जाएंगे। सहजयोगी होने के नाते आपको अपने जीवन में ईसा का प्रकाश लाना होगा। वे एक नवयुवक थे पर उनका मैरी मैगदालीन नामक वैश्या से कोई सम्बन्ध न था। जब लोग उस वैश्या को पत्थर मारने लगे तो खड़े होकर ईसा ने कहा " जिन्होंने कभी कोई अपराध नहीं किया वे मुझे पत्थर मारें"। केवल उनका व्यक्तित्व ही पवित्र न था उन्होंने पवित्रता की अभिव्यक्ति भी की। श्रीगणेश परिवर्तित हो गए। श्री गणेश अपने भक्तों के प्रति अत्यंत करुणामय हैं। परन्तु जो उनके विपरीत चलते हैं उन्हें वे कठोर दण्ड देते हैं । वे चिंता नहीं करते। उन लोगों को कष्ट भुगतना पड़ता है। परन्तु पवित्र लोगों की वे रक्षा करते हैं। ईसा सबके प्रति दयामय हैं क्योंकि वे जानते हैं कि सबमें परिवर्तन हो सकता है। श्री गणेश सोचते हैं कि अपवित्र लोगों का वध होना ही ठीक है ताकि वे पुनर्जन्म ले सकें। ईसा को आशाएं थी। पर क्रूसारोपित हो जाने के कारण वे मानव को परिवर्तित न कर सके।

केवल विवेकशील व्यक्ति ही सहजयोग अपना सकते हैं। न तो यह जाहिल और मूर्खों के लिए है और न तेज तर्रार लोगों के लिए। इसी लिए ईसा ने कहा था कि "हृदय से नम्र लोग ही पृथ्वी के उत्तराधिकारी होगें"। अपने अहँ में रहने वाले नहीं। सहजयोगियों में नम्र हृदय लोगों को ही मां का आशीष प्राप्त होगा। आपको बुद्धिमान बनना है। विवेक से ही आप नम्र बनेगें। देखिए कि इस महान ब्रह्माण्ड में हम कहां है। आप जान जाएंगे। कि किस लिए आपने परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश किया है। हम कैसे यहां आए हैं? बहुत लोगों ने हजारों वर्ष बलिदान देकर, सिर के भार खड़े होकर, व्रत रख कर इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए तपस्या की परन्तु उन्हें यह आशीष प्राप्त न हो सका। हम यहां किस प्रकार पहुंच गए? जब हम कारण खोजने लगते हैं तो नम्र हो जाते हैं। यह आशीष है, कृपा है। यह हमें अहँ और बन्धन से नहीं मिला, यह मात्र कृपा, करुणा, और प्रेम है। इस परिवर्तित जीवन का आनन्द लीजिए। अध्यात्मिकता के नए परन्तु वास्तविक आयाम का आनन्द लीजिए।

जिन्होंने स्वयं को नहीं पहचाना वे सहजयोगी नहीं बने। आप को दूसरों के चक्रों का ज्ञान है पर अपने चक्रों को आप नहीं जानते। आप दूसरे लोगों का मूल्यांकन कर सकते हैं अपना नहीं? दूसरों के विषय में आप बात करते हैं पर अपने विषय में कुछ नहीं जानते। तो आप सहजयोगी नहीं हैं। स्वयं को जानिए। किस अहंकार में मैं फँसा हुआ हूँ, कौन से बन्धनों में लिप्त हूँ? सहजयोग का नया अनुशासन है। इस नए अनुशासन में आपको विनीत, विनम्र तथा विवेकशील बनना है। आपकी हर बात तथा हर कदम से विवेक तथा अनुशासन झलकना चाहिए, अनुशासन स्वतः ही आपको गलत कार्यों से रोकेगा। जब मैं चल रही होती हूँ तो कोई भी अचानक मेरे पैरों पर पड़ जाता है या मेरे पैर पकड़ लेता है। ये भी नहीं सोचता कि इस प्रकार मैं गिर भी

सकती हूँ। यह सब मनमानी है। मैं मां को देखूं, उनसे जाकर मिलूं। यह सब अहँ हैं। वास्तविक सहजयोगी पीछे खड़ा होता है। वहीं से वह आनन्द ले सकता है क्योंकि वह जानता है कि मैं सर्वत्र हूँ। वह मुझे मिलना नहीं चाहता। वह धक्का मार कर आगे नहीं आता। यही विनम्रता है। पश्चिम में विनम्र को दुर्बल समझा जाता है। उच्च व्यक्ति समझा जाने वाला राक्षस सम किस प्रकार हो सकता है? सहजयोग में स्वभाविक विनम्रता आपको महान अध्यात्मिकता से चमकती है। कोई आप को छू नहीं सकता। बस आप स्वयं गिर सकते हैं। यदि आप ही अपना विनाश करना चाहें तो मैं कुछ नहीं कर सकती। तुका राम ने कहा है " स्वयं को पहचानिए'। सर्व प्रथम आवश्यकता अर्न्तदर्शन करने की है।आप क्या कर रहे हैं? क्या आप स्वयं को देख रहे हैं? ध्यान के समय अर्न्तदर्शन कीजिए कि 'हे ईसा, हे श्री गणेश कृपया मुझे स्वयं को देखने का विवेक दीजिए जिससे मैं जान सकूं कि मुझ में क्या दोष है और सहजयोगी के कौन से अच्छे गुणों का मुझमें अभाव है। केवल ध्यान करने से ही आप अति प्रसन्न तथा आनन्दमग्न हो जाते हैं क्योंकि आपके आन्तरिक गुण ही आनन्द प्रदान करते हैं। वास्तव में हमें एकाग्र चित्त होना चाहिए।

कुछ लोग सहजयोग में इसलिए आते हैं कि वे यश नेतृत्व या धन प्राप्त करने के लिए सहजयोग का उपयोग कर सकें। सहज योग या सहजयोगियों के साथ व्यापार न करे। यदि आप ऐसा करेंगे तो कठिनाई में पड़ जाएंगे। सहजयोग केवल परमात्मा का कार्य हैं। जो भी कुछ आप करते हैं वह आपके स्व के लिए है, परमात्मा के लिए है। दूसरों की आलोचना कम होनी चाहिए। अर्न्तदर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण है। तब आप स्वयं पर हंसेंगे। इससे आपका अहँ समाप्त हो जाएगा। मैं किस प्रकार अपना प्रभाव डालने का प्रयत्न कर रहा हूँ? ईसा की बताई हुई नम्रता मुझमें कहां है? हम में प्राकृतिक अच्छाई है। आप अति सुन्दर तथा प्रेम करने योग्य बन जाते हैं। एक बार जब यह चमक आ जाती है तो, आप मुझसे दूर बैठे हों या समीप, मैं सब को पहचानती हूँ। ऐसे व्यक्तित्व वाले मानव के लिए मेरा हृदय खुल जाता है। मैं जानती हूँ कि वे कौन हैं। परन्तु चाहे मैं जानती ही होऊं मैं कभी बताऊंगी नहीं। अच्छा हो कि आप स्वयं को जान लें। बिना किसी धोखे या झूठ के पूरे चित्त के साथ वास्तविकता में स्वयं को जानें। देखें कि आपका चित्त कहां जा रहा है। इसी प्रकार आपका उत्थान होगा। दूसरों के दोष देखने से नहीं, अपने आप को देखने से आपका उत्थान होगा। यही बात श्री ईसा ने साधारण शब्दों में कही है।

उन्होंने कहा है " अपने पड़ोसी को वैसे ही प्रेम करें जैसे आप स्वयं को करते हैं"। वह केवल सहजयोग में ही सम्भव है क्योंकि आप सामुहिक हो जाते हैं। जो सामुहिक नहीं है वे किस प्रकार पड़ोसी को प्रेम कर सकते हैं? सामाजिक तथा सामूहिक रूप से आप बहुत सुधरे हैं, परन्तु व्यक्तिगत रुप से आशीष प्राप्त करने के लिए आपको सुधरना है।

ईसा का नाम लेकर उनके विपरीत कार्य करने वाले लोगों को बचाने का प्रण हमें लेना चाहिए। यदि आपके जीवन से यह उपलब्धि हो जाए तो ईसा का कार्य हो गया। अपने जीवन से आपने ईसा की अभिव्यक्ति करनी है। ईसा की पवित्रता , नम्रता, करुणा तथा विवेक द्वारा आपको पूर्ण निर्भय होकर परमात्मा के अतिरिक्त किसी से भी नहीं डरना। यदि आप निर्दोष हैं तो परमात्मा से भी डरने की कोई बात नहीं। वे तो आप से प्रेम करते हैं। हर चीज के बारे स्पष्ट हो जाइए। आप लोग प्रेम योग्य हैं, अपने गुणों के लिए स्वयं को प्रेम कीजिए।

परमात्मा आपको धन्य करें।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

सहजयोग में गहनता प्राप्त करने के लिए परम पूज्य श्री माताजी की सहजयोगियों को शिक्षा

1. हर सहजयोगी को प्रतिदिन अपने चक्र साफ करने चाहिएं।
2. सभी को निर्विचार समाधि तथा गहनता प्राप्त करनी चाहिए।
3. हर सहजयोगी को व्यक्तिगत तथा सामुहिक रूप से प्रार्थना करनी चाहिए।
4. सहजयोगी को पूर्णश्रृद्धा पूर्वक समझदारी, विवेक तथा बुद्धि के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।
5. हर सहजयोगी को सदा याद रखना चाहिए कि श्रीमाताजी के चरण कमल उन सभी के हृदय में हैं। श्री माताजी ने संत गोरा कुम्हार तथा सन्त नाम देव के एक दूसरे के प्रति सम्मान का उदाहरण दिया। एक सहजयोगी के दूसरे सहजयोगी के लिए भी यही भाव होने चाहिए।
6. हममें परस्पर वाद–विवाद तथा विचार भिन्नता नहीं होनी चाहिए।
7. नियमित ध्यान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

कृपया ध्यान दें

आश्रम आने के विषय में:–

सहजयोग आश्रमों में आगन्तुको का खाने के लिए तथा यदि आवश्यक हो तो रात्री विश्राम के लिए स्वागत है। परन्तु क्योंकि कुछ आगन्तुको ने आश्रमों का सुलभ तथा सस्ते या निः शुल्क होटलों की तरह उपयोग किया है, श्री माताजी ने निम्नलिखित नियम सुझाए हैं:–

अपने देश में या विदेश में भ्रमण करते हुए कोई भी सहजयोगी न तो किसी आश्रम में रुके और न ही किसी आश्रम या सहजयोगी के घर पर रुकने का स्थान मांगे।

अपने अगुआ की आज्ञा लेकर भी यदि कोई सहजयोगी आता है तो भी अपना खर्च उन्हें खुद उठाना होगा।

सभी आश्रम खाने तथा रहने के खर्च के बारे डाक द्वारा बताएं।

अन्तर्राष्ट्रीय राष्ट्रीय सहजयोग अभिलेख

विश्व के सभी केन्द्रों को पुनः सूचित किया जाता है कि जैनेवा का अन्तरराष्ट्रीय अभिलेखागार सहज योग प्रचार सम्बन्धी हर महत्वपूर्ण सामग्री की एक प्रति रखना चाहेगा। जब भी आपका केन्द्र किसी कार्यक्रम की व्यवस्था करे तो सारे पत्र, इश्तिहार, समाचार–पत्र–सामग्री तथा अन्य चीजों को एक फाइल में लगाकर सरोज को नीचे लिखे पते पर भेजें:–

ECHEPAREBORDA AT :-

GIVRINS ASHRAM
ROUTE DE LA BELLANGERE
1261 GIVRINS VD
SWITZER LAND
Phone - 22 692644

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

विनती सुनिए

विनती सुनिए आदिशक्ति मेरी,
पूजन का अधिकार दीजिए,
शरणागत है हृदय पुजारी॥

गुरु चरणन की लागी लगन है,
तव चरणन में उतरा स्वर्ग है।
परमेश्वरी हे मंगलकारी,
खोए साधक पार उतारी॥

प्रीत बहे अविरल नयनों से,
हे हृदयेश्वरी भव भय भंजन।
मां ऐसी शुभ शक्ति दीजिए,
सब में जागे आनन्द बिहारी॥

और कहूँ क्या अर्न्तयामी,
आत्म बोध अनुभूति की दात्री।
आदि गुरु गुरुओं की माता,
इस विनीत को गुरुपद दीजिए॥

Printed at Bharati Printers, WZ-113, Shakurpur Village, Delhi-110034 Phone : 5413126, 5437741